



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 43]

नई दिल्ली, बुधवार, फरवरी 5, 2003/माघ 16, 1924

No. 43]

NEW DELHI, WEDNESDAY, FEBRUARY 5, 2003/MAGHA 16, 1924

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 फरवरी, 2003

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य और यूएई के मूल अथवा वहां से निर्यातित विट्रीफाईड/पोर्सलीन टाइलों के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच।

सं. 37/1/2001-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथासंशोधित टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियम 1995 को ध्यान में रखते हुए;

क. प्रक्रिया

1. नीचे दी गई प्रक्रिया का पालन किया गया है:

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) ने चीन जनवादी गणराज्य तथा यू ए ई (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश कहा जाएगा) के मूल अथवा वहां से निर्यातित विट्रीफाईड/पोर्सलीन टाइलों (जिन्हें इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा जाएगा) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जोंचों के संबंध में दिनांक 3 दिसम्बर 2001 को प्रकाशित अधिसूचना सं. 37/1/2001-डीजीएडी के प्रारंभिक परिणामों को अधिसूचित किया है तथा हितबद्ध पार्टियों को प्रकाशन की तारीख से चालीस दिन के भीतर अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया है;

- (ii) प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों की एक प्रति ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को भेजी तथा पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर, प्रारंभिक जांच परिणाम पर अपने विचार, यदि कोई हों तो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया;
- (iii) प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम की एक प्रति नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को अग्रेषित की तथा उनसे अनुरोध किया कि वे प्राथमिक जांच परिणामों पर अपने विचार प्रस्तुत करें;
- (iv) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों के विचार मौखिक रूप से सुनने के लिए 2 जुलाई 2002 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया, जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों तथा यू.ए.ई. के आयातकों और निर्यातकों ने भाग लिया। सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों की लिखित प्रस्तुतियाँ/उत्तर प्रस्तुत करने का अनुरोध भी किया था। हितबद्ध पार्टियों से इस तरह से प्राप्त लिखित प्रस्तुतियों/उत्तरों पर निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच के दौरान विचार किया जाएगा;
- (v) प्राधिकारी ने विभिन्न संबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल, सभी हितबद्ध पार्टियों को उनके अनुरोध पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई;
- (vi) प्रारंभिक निष्कर्षों की घोषणा से पहले हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों, जिन्हें 3 दिसम्बर 2001 को प्रकाशित किए गए प्रारंभिक जांच परिणामों में प्रकाशित किया गया है, को संक्षिप्तता के कारण इनमें दोहराया नहीं गया है। परंतु हितबद्ध पार्टियों द्वारा बाद में दिए गए तर्कों पर प्रारंभिक निष्कर्षों और/या इन निष्कर्षों में उचित ढंग से विचार किया गया है।
- (vii) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचारित अनिवार्य तथ्यों/आधारों को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समक्ष 17 जनवरी 2003 को प्रकट किया गया। इन पर प्राप्त टिप्पणियों पर भी इन जांचों के दौरान विचार किया गया है।
- (viii) जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2000 से 31 मार्च 2001 तक की थी।
- (ix) निर्यातक के ऑकड़ों का सत्यापन निर्यातक के परिसर, मै0 आरएके(राक) सिरेमिक्स, यूएई में किया गया।
- (x) इस अधिसूचना में ***चिह्न से हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना प्रदर्शित होती है और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी ने इसे गोपनीय ही माना है।

ख. याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार तथा प्राधिकारी द्वारा उनकी जाँच

2. अन्य मुद्दों पर हितबद्ध पार्टियों के विचार

क) घरेलू उद्योग के विचार

- (i) मौखिक साक्ष्य के पूर्व निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष कुछ आयातकों के पेश होने के संबंध में हमें आपत्ति है। उप नियम 6(4) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा मांगी गई सूचना व्यक्तियों द्वारा लिखित में प्रस्तुत की जानी चाहिए। तथापि, नियम 6 के अंतर्गत हितबद्ध पक्षकारों के लिए सूचना उपलब्ध कराने की स्पष्ट बाध्यता है। नियम 6(4) तथा 6(6) के विषय क्षेत्र तथा बाध्यताएं आपस में जुड़ी हुई नहीं हैं क्योंकि नियम 6 विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के अधिकारों एवं कर्तव्यों का कमिक रूप से पालन करता है। इसलिए हमारा निवेदन है कि प्राधिकारी कृपया उन हितबद्ध पार्टियों द्वारा दी गई प्रस्तुतियों को स्वीकार न करें जिन्होंने नियमों के अंतर्गत अपने विधिक कर्तव्यों को पूरा नहीं किया है। याचिकाकर्ताओं को प्रत्युत्तर देने का अवसर उपलब्ध कराए बिना कई हितबद्ध पार्टियों को याचिकाकर्ताओं के मुकदमों पर टिप्पणी करने का अवसर दिए जाने पर भी हमें आपत्ति है, क्योंकि यह प्राकृतिक न्याय का उल्लंघन है।
- (ii) आयातकों/निर्यातकों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि पाटनरोधी शुल्कों का लगाया जाना उपभोक्ताओं के हित में नहीं है। यूए ई के प्रमुख उत्पादक मै0 आरएके(राक) सिरेमिक्स ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि वे भारत को तीसरे एवं चौथे दर्जे के टाइलों की सप्लाई करते हैं। तीसरे एवं चौथे दर्जे के उत्पादों के आयात से उपभोक्ता हितों को लाभ नहीं पहुँच सकता।
- (iii) निर्दिष्ट प्राधिकारी बनाम मै0 हाल्दोर टोपसो के प्रकरण में माननीय उच्चतम न्यायालय का निर्णय हितबद्ध पार्टियों को मौखिक प्रस्तुतियाँ देने का अधिकार प्रदान किए जाने के संबंध में प्रासंगिक है। इस संबंध में हम पूर्व में किए गए अपने समस्त निवेदनों को दोहराते हैं।
- (iv) उल्लिखित है कि याचिकाकर्ताओं को माडल से माडल तथा ग्रेड से ग्रेड के आधार पर – मूल्य लागत, बिक्री कीमत तथा अन्य जानकारियाँ प्रस्तुत करना आवश्यक है, तथा उनके बिना, आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकता। यह भी तर्क दिया गया है कि ऐसी त्रुटि को इस चरण में सुधारा नहीं जा सकता। इस संबंध में माना गया है कि घरेलू उद्योग ने नियम 5(1) तथा (2) के अनुसार सूचना प्रस्तुत कर दी है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता की स्थिति का परीक्षण किया है तथा दिनांक 6.8.2002 की अपनी प्रारम्भिक सूचना में इसका उल्लेख किया है।

(v) पाटनरोधी नियम 5(3) के दो भाग हैं:

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच से पहले केवल 'स्थिति' का निर्धारण किया जाना चाहिए, पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में नहीं।
- (ii) जहाँ तक प्रमाणों की पर्याप्तता का प्रश्न है, प्रमाणों की सत्यता एवं समुचितता के साथ-साथ इस विषय पर निर्दिष्ट प्राधिकारी की संतुष्टि काफी है। निर्यातक के प्रतिनिधि का यह तर्क कि सभी बातों का निर्धारण पूर्ण रूप से होना चाहिए, वैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत ऐसी कार्यवाहियों के संचालन के कमिक आधार से बिल्कुल विपरीत है। यदि प्रमाण संतोषजनक हैं, तो आगे, माडल से माडल तथा ग्रेड से ग्रेड के आधार पर ही नहीं, बल्कि किसी भी प्रकार के निर्धारण की आवश्यकता नहीं है।

ख) बिल्डर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के विचार

- (i) आयातित उत्पादों की उपलब्धता उद्योग और भारतीय उपभोक्ताओं के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है और इसने विट्रिफाइड टाइलों के लिए बाजार का पर्याप्त विस्तार करने में मुख्य भूमिका अदा की है।

ग) मै0 त्रिशला डिस्ट्रिब्यूटर्स के विचार

- (i) प्राधिकारी ने सैकड़ों उपभोक्ता संगठनों, व्यापारियों, आयातकों और वितरकों द्वारा किए गए निवेदनों की पावती नहीं भेजी है जिन्होंने प्रारंभिक जांच परिणामों से बहुत पहले अपने निवेदन दायर किए हैं।

घ) मै0 केंट सिरामिक टाइल्स कं0 प्रा0 लि0 और मै0 कजरिया सिरामिक्स के विचार

- (i) याचिकाकर्ता ने नियम 6 के प्रावधानों का गलत अर्थ लगाया है। नियम 6(4) और नियम 6(6) स्पष्ट रूप से स्वतंत्र हैं। माननीय उच्चतम न्यायालय ने हालडोर टोपसो के मामले में सामान्य कीमत के निर्धारण की पद्धति के संबंध में मामले पर विचार किया और इस मुद्दे के बारे में विचार नहीं किया कि नियम 6 के अंतर्गत निवेदन करने से प्रतिबंधित हैं।
- (ii) विट्रिफाइड टाइलों की विभिन्न किस्मों का अलग-अलग वर्गीकरण करने के लिए याचिकाकर्ता की विफलता और निरंतर अनिच्छुकता ताकि उचित रूप से यह

मूल्यांकन किया जा सके कि क्या इस बात का पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है कि पाटन, वास्तविक क्षति और कारणात्मक संबंध केवल तकनीकी और वाणिज्यिक विचार से ही प्रतिकूल नहीं है बल्कि सेरामिक फ्लोर टाइलों के आयात के मामले में डिस्प्यूट सैटलमेंट पेनल रिपोर्ट ऑफ अर्जेन्टीना बनाम इटली के दायरे में भी हैं।

- (iii) सूचना प्रस्तुत करने में आयातकों की विफलता से आयातकों के निर्यात मूल्य और मात्रा के मुद्दों पर प्रभाव पड़ सकता था। तथापि इससे विचाराधीन उत्पाद, साक्ष्य की शुद्धि अथवा पर्याप्तता, वास्तविक क्षति न होना और कथित पाटन का कारणात्मक संबंध न होने के मुद्दों पर या निवेदन न करने के मसलों से आयातकों व अन्य हितबद्ध पक्षकारों के लिए कोई मनाही नहीं होती है।

ड) मै0 निटको टाइल्स के विचार

- (i) नियम 2 (ग) के अनुसार हितबद्ध पक्षकार शब्दों को ऐसे किसी निर्यातक अथवा आयातक के रूप में परिभाषित नहीं किया गया है जिसने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया हो। हितबद्ध पक्षकार शब्दों में आयातकों की कोई एसोसिएशन, निर्यातकों की एसोसिएशन, निर्यातक देश की सरकार भी शामिल हैं। इन हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारी द्वारा निर्धारित किसी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं होती है। प्रश्नावलियां भेजना और मौखिक सुनवाई में भाग लेना जांच के 2 अलग-अलग पहलू हैं। नियम 6 (6) के अंतर्गत कानूनी अपेक्षा केवल यह है कि उक्त मौखिक सूचना को केवल तभी ध्यान में रखा जाए जब इसे लिखित में पुनः प्रस्तुत किया जाए। इसलिए, घरेलू उद्योग द्वारा की गई आपत्ति निराधार है। हम सुनवाई में ही इस आपत्ति को खारिज करने के लिए प्राधिकारी के आभारी हैं। हमने आयातक प्रश्नावली का अलग उत्तर भेजा है (गोपनीय और अगोपनीय दोनों रूपांतर)।
- (ii) घरेलू उद्योग को विभिन्न तालिकाओं में आंकड़ों की सूची देने का निर्देश दिया जाना चाहिए और अनुच्छेद 6.5.1 के अनुसार अगोपनीय सारांश उपलब्ध कराया जाना चाहिए। विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को याचिका के अगोपनीय रूपांतर में ***के स्थान पर सूची के आंकड़े देते हुए पुनः प्रस्तुत करते हुए निर्देश दिए जाने चाहिए।
- (iii) मै0 हालडोर टोपसे बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए संदर्भ की वर्तमान मामले के तथ्यों के साथ कोई संगति नहीं है। उस मामले में एक निर्यातक ने ऐसी सूचना प्रस्तुत नहीं की थी जो उसके पास

उपलब्ध थी और उस मामले में उच्चतम न्यायालय ने यह माना था कि निर्यातक प्राधिकारी द्वारा प्रयोग की गई सर्वोत्तम सूचना के बारे में तर्क नहीं दे सकते। उच्चतम न्यायालय ने यह नहीं कहा था कि इसके परिणामस्वरूप हालडोर टापसवे कार्यवाहियों में बिल्कुल भाग नहीं ले सकता। इस मामले में निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर का वास्तविक क्षति और कारणात्मक संबंध से संबंधित निवेदनों के साथ कोई लेना-देना नहीं।

- (iv) यह मालूम होता है कि निर्यातक आंकड़े विचाराधीन उत्पाद की व्यक्तिगत पहचान द्वारा डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों से संकलित किए गए हैं। इस पद्धति में घरेलू उद्योग द्वारा जोड़ तोड़ की हुई हो सकती है। सभी उत्पाद कीमतों को एक उत्पाद में इकट्ठा करने से समग्र तस्वीर विकृत हो गई है। विचाराधीन उत्पाद की कोई स्पष्ट परिभाषा न होने के कारण पाटन, वास्तविक क्षति और कारणात्मक संबंध के बाद के सभी स्तर विकृत हो गए हैं और उनको उद्देश्यपरख और निष्पक्ष नहीं कहा जा सकता।

च) मै0 रॉक सिरामिक, यू ए ई के विचार

- (i) जांच की शुरुआत दोषयुक्त है और नियम 5 के अनुसार नहीं है। शिकायतकर्ता ने आवेदन में पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जो पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध को प्रथम-दृष्ट्या सिद्ध करने के लिए आदेशात्मक है। आवेदकों ने अपने आवेदन में दोनों उत्पादों के कई एक माडलों और आकारों और उनकी कीमतों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य को छिपाया है और इस आशय की सूचना देने के लिए अनुस्मरण कराए जाने के बावजूद ऐसा करते रहे।
- (ii) पाटनरोधी शुल्क 1995 के नियम 5(3)(ख) के अभिव्यक्त उपबंधों की दृष्टि से उत्पाद के संबंध में महत्वपूर्ण सूचना पूर्व प्रभावी रूप से शुद्ध नहीं की जा सकती। शिकायतकर्ता उत्पादों, पाटन और क्षति तथा कम बिक्री और मूल्य में कटौती तथा एनआईपी के लिए भी एक माडल और एक किस्म के रूप में मान रहा है। अलग-अलग माडलों, अलग-अलग ग्रेडों की गणना करना अनिवार्य है। इसलिए उत्पाद के अनुचित विवरण को ध्यान में रखते हुए मामले की शुरुआत साक्ष्य की शुद्धता और पर्याप्तता की जांच में खरी साबित नहीं हुई है और इसलिए यह शुरुआत दोषपूर्ण है।
- (iii) प्रस्तावित अनंतिम पाटनरोधी शुल्क नियमावली 1995 के नियम 13, नियम 17(3) के प्रावधानों, पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 6(10) और अनुच्छेद 2(4) के प्रतिकूल है। प्राधिकारी इन स्पष्ट भौतिक अंतरों के लिए कोई समायोजन करने में विफल रहे हैं जिससे कीमत की तुलनीयता प्रभावित होती है। व्यापार, मात्रा

छ) मैसर्स अल-खालिज सिरामिक्स, यूएई के विचार

मै० अल-खालिज ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार उत्तर प्रस्तुत नहीं किया था। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद निर्यातक ने कुछ-एक निवेदन किए हैं जो इस प्रकार हैं:-

- (i) शुरुआत और प्रारंभिक जांच परिणामों में पाटनरोध के संबंध में डब्ल्यूटीओ करार को स्पष्ट रूप से भंग किया गया। वर्तमान कार्यवाहियों में उत्पादकों विभिन्न ग्रेडों का अंतर किए बिना इकट्ठा कर दिया गया है और ये ग्रेड अलग-अलग गुणता और कीमत के हैं। कोल्ड रोल्ड स्टील प्लेटों जैसी कार्यवाहियों में भी अलग-अलग ग्रेडों का संदर्भ लिया गया था। ग्रेडों को इकट्ठा करने से पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध का ठीक निर्धारण नहीं होता। दो अमरीकी डालर प्रति वर्ग मी० की दर से विनिर्मित भारतीय टाइलों को 13 अमेरिकी डालर प्रति वर्ग मी० की दर से टाइलों के आयात द्वारा अथवा इसके विपरीत कोई क्षति नहीं पहुंच सकती।
- (ii) शुरुआत अनुच्छेद 5.3 और 5.8 के अनुसार नहीं है। आवेदन में पर्याप्त और सही साक्ष्यों की कमी है। इसलिए आवेदन के साथ पूरे दस्तावेज नहीं लगाए गए हैं। क्योंकि इससे विचाराधीन उत्पाद के अलग-अलग ग्रेडों का विश्लेषण नहीं होता है।

ग.3. विनिर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी प्रकटन विवरण के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के विचार

(i) घरेलू उद्योग के विचार

- (क) रॉक का वर्गीकरण वैट्रीफाइड टाइलों की गुणता के आधार पर किया जाता है जिसे टाइल के पूर्णतः उत्पादित होने के बाद ही निर्धारित किया जाता है। विनिर्दिष्ट प्राधिकारी ने निश्चित रूप से यह माना है कि पाटनरोधी मामले के लिए गुणवत्ता कोई मुद्दा नहीं है। इस स्थिति को सिगेट द्वारा भी पुष्ट किया गया है।
- (ख) हमने अलग से यह अनुरोध किया है कि वैट्रीफाइड टाइलों के विभिन्न ग्रेडों का वर्गीकरण भौतिक विनिर्दिष्टताओं में अंतरों द्वारा अवश्य ही समर्थित होना चाहिए। इन विनिर्दिष्टताओं को हमारी टिप्पणियों के लिए नहीं बताया गया।

तदनुसार, ग्रेड के आधार पर तुलना करने के लिए विनिर्दिष्ट प्राधिकारी की नीति पूर्णरूपेण त्रुटिपूर्ण है।

- (ग) प्राधिकारी ने बिकी वसूलियों के आधार पर विभिन्न प्रकार की टाइलों की कीमत के लागत को विभाजित करने के संबंध में रॉक के दावे को सीधा खारिज कर दिया है।
- (घ) उद्देश्यपरख लागत अनुमात परिकलित करने के लिए ऊपरी खर्चों का समायोजन करने की सही पद्धति आवश्यक है। बिकी वसूलियों के आधार पर बिकी और वितरण, खर्चों और ब्याज लागतों को विभाजित करने के लिए विनिर्दिष्ट प्राधिकारी का निर्णय त्रुटिपूर्ण है। ब्याज की लागत किसी कारखाने का ऊपरी खर्च है और इसे बिकी वसूली के आधार पर नहीं बल्कि प्रत्यक्ष लागत के आधार पर आबंटित किए जाने की आवश्यकता है। बिकी वसूली के आधार पर बिकी खर्चों के आबंटन से एक यह नाजुक बिंदु छूट जाता है कि उत्पाद की बिकी में किए जाने वाले प्रयास वही रहते हैं चाहे उसका आकार / ग्रेड / माडल कोई भी हो। लागत के इस घटक को विभाजित करने के लिए उचित पद्धति यह होगी कि बिकी के ऊपरी खर्चों का आबंटन आकार के अनुसार किया जाए। वितरण लागत, बिकी वसूली से भिन्न नहीं होगी। बिकी लागत के आधार पर वितरण लागत का आबंटन त्रुटिपूर्ण है।
- (ङ) उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग ने विनिर्दिष्ट प्राधिकारी से मै0 रॉक सिरेमिक्स के लिए पाटन मार्जिन को पुनः परिकलित करने के लिए अनुरोध किया है।
- (च) पैकिंग लागत से संबंधित समायोजनों का दावा केवल उस सीमा तक किया जा सकता है कि घरेलू खपत के लिए माल की पैकिंग निर्यातों के माल की पैकिंग से अलग है। व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करने के प्रयोजनार्थ उत्पादन की लागत से पैकिंग खर्चों को कम नहीं किया जा सकता।
- (छ) मै0 रॉक सिरेमिक्स ने निर्यातक प्रश्नावली के अगोपनीय रूपांतर में परिशिष्ट 3 से परिशिष्ट 10 तक प्रस्तुत नहीं किए हैं। ब्याज की लागत, निर्यातक की सकल लागत में बिकी और वितरण खर्च से संबंधित सूचना न होने के कारण हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते हैं कि त्रुटिपूर्ण पद्धति का सामान्य मूल्य पर क्या प्रभाव होगा और इस प्रकार विशेष निर्यातक के मामले में पाटन मार्जिन कितना होगा।

(ii) निर्यातक के विचार

मै0 रॉक सिरिमिक्स यूएई

(क) उन्होंने घरेलू बाजार में बिक्रियों के साथ-साथ उस आधार के बारे में पूरे ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं जिस पर व्यापार समायोजन के स्तर का दावा किया गया है। इस सूचना को रॉक द्वारा निर्यातकों की प्रश्नावली के साथ जांच कार्यवाही के दौरान प्रस्तुत किया गया था। अब जैसे कि प्राधिकारी द्वारा सूचना दी गई है और इच्छा व्यक्त की गई है कि व्यापार के स्तर के समायोजनों के प्रयोजनार्थ इस सूचना की घरेलू बाजार में अंतिम प्रयोक्ताओं और व्यापारियों के बीच ग्रेड बार, किसी विशेष आकार के लिए माडलवार तुलना किए जाने की जरूरत है। इस सूचना को विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को पर्याप्त रूप से प्रस्तुत किया गया है। मै0 रॉक द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर निर्यातक ने व्यापार के स्तर के लिए ****% के रूप में समायोजन का दावा किया है।

(ख) प्राधिकारी ने यह स्वीकार किया है कि संबद्ध वस्तु का रॉक द्वारा देश में निर्यात किया जा रहा है और घरेलू उद्योग द्वारा पालिश किए और बिना पालिश किए हुए विभिन्न आकारों और ग्रेडों, माडलों में उत्पादन और बिक्री भी की जा रही है। इसलिए संबद्ध वस्तु की कीमतें इन विभिन्न विशेषताओं के अनुसार भिन्न भिन्न हैं क्योंकि विभिन्न आकारों और ग्रेडों और माडलों की विभिन्न टाइलों की एक संदर्भ कीमत देते हुए पहुंच लागतें काफी हद तक ऐसी स्थिति उत्पन्न करेंगी जहां सभी ग्रेडों के लिए एक ही संदर्भ कीमत निर्धारित की जाएगी। यह विनिर्दिष्ट प्राधिकारी की ग्रेडों / आकारों और माडलों की स्वीकृति से संबंधित मूल निष्कर्षों के विपरीत होगी। किसी संदर्भ कीमत पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी जहां प्रभावी शुल्क अनेक आकारों / ग्रेडों / माडलों में पाटन मार्जिन से अधिक होगा। उपर्युक्त तर्कों के समर्थन में निर्यातक ने तीन मामलों और अंतिम जांच परिणामों में संदर्भ कीमत के आधार पर पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की है और प्राधिकारी द्वारा नियत शुल्क की सिफारिश की गई है। निर्यातक ने यह निवेदन किया है कि यदि पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की जाती है तो वह प्रारंभिक जांच परिणामों में लगाए गए परिवर्तनीय शुल्क की तुलना में एक नियत शुल्क होना चाहिए।

(ग) क्षति और कारणात्मक संबंध से संबंधित मुद्दे के बारे में निर्यातक ने अपने उन्हीं तर्कों की पुनरावृत्ति की है जिन्हें जांच प्रक्रिया के दौरान उठाया गया था।

(iii) आयातकों के विचार

(i) मैसर्स निटको टाइल्स लि0

(क) प्राधिकारी ने यूएई से मै0 रॉक सिरिमिक्स के लिए विभिन्न आकारों, माडलों, ग्रेडों आदि के लिए विभिन्न सामान्य मूल्य निर्धारित करने की बात उचित रूप

से स्वीकार की है और इसका प्रस्ताव किया है। चीन के संबंध में इस तर्क की अनदेखी नहीं की जा सकती। तदनुसार, विभिन्न आकारों / माडलों / ग्रेडों के लिए किसी निर्धारित सामान्य मूल्य का परिकलन किया जाना आवश्यक है। चीन के लिए उल्लिखित एक सामान्य मूल्य से आकारों, माडलों, ग्रेडों, पालिश के स्तर आदि में अंतरों के कारण अपेक्षित परिवर्तन परिलक्षित नहीं होते हैं। प्राधिकारी विभिन्न आकारों, मॉडलों, ग्रेडों आदि की टाइलों के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य निर्धारित करेंगे और उसकी तुलना संबंधित आकारों, मॉडलों और ग्रेडों के निर्यात मूल्य के साथ करेंगे।

- (ख) आयात देश में 1.4.200 से आने शुरू हुए थे। इससे पहले घरेलू बाजार का इसमें 100 प्रतिशत बाजार का हिस्सा था। भारत में आयातों की अनुमति के बाद भी घरेलू उद्योग बाजार में 100 प्रतिशत हिस्सा बनाए रखने की उम्मीद नहीं कर सकता। ये तथ्य यह है कि घरेलू उद्योग का यदि बाजार में 100 प्रतिशत हिस्सा न हो तो इससे कोई क्षति हो जाएगी।
- (ग) जैसा कि प्रकटन विवरण में प्रस्ताव किया गया है प्राधिकारी क्षति के सभी 15 मानदंडों का मूल्यांकन करेंगे।
- (घ) मूल्य में कटौती का निर्धारण आयात के सी आई एफ स्तर पर नहीं किया जाएगा बल्कि ऐसी कीमतों पर किया जाएगा जिन पर आयातित वस्तु को घरेलू बाजार में पुनः बेचा जाता है।
- (ङ) प्राधिकारी को पाटन मार्जिन के अगोपनीय प्रकटन के समान ही घरेलू उद्योग के गैर क्षतिकारक कीमत की गणना की पद्धति को भी प्रकट करना चाहिए।
- (ii) मैसर्स त्रिशला डिस्ट्रिब्यूटर्स
- (क) स्थानीय विनिर्माता की लागत कीमत को ध्यान में रखा गया मालूम नहीं होता है।
- (ख) चीन के विनिर्माता से सूचना प्राप्त न होने के कारण आयात के प्रति यह अनुचित होगा कि उसके विचारों पर ध्यान दिया जाए। इसलिए, चीन के आयातक के विचारों को भी ध्यान में रखा जाए।
- (ग) यदि प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क लगाना चाहते हैं तो स्थानीय निर्माता कीमतों पर भी विचार किया जाना चाहिए और पाटनरोधी शुल्क की मात्रा को कम किए जाने की जरूरत है। मै0 एच आर जॉनसन इंडिया की कीमत सूची से यह स्पष्ट है कि जब उत्पाद शुल्क के भुगतान से पहले किसी स्थानीय विनिर्माता

की कीमत केवल कमश*** अमरीकी डालर और *** अमरीकी डालर होती है तो प्रस्तावों के अनुसार स्वीकार की जाने वाली अतिरिक्त शुल्क के मुगतान से पहले आयात कीमत 13.62 अमरीकी डालर है। यह स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण है और इस प्रकार बिना पूर्वाग्रह के तर्क यह है कि कोई पाटनरोधी शुल्क न लगाया जाए।

4 प्राधिकारी द्वारा जांच:

- (i) प्राधिकारी ने उन आयातकों को प्रदान किए जाने वाले अवसर के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों को नोट किया है जिन्होंने सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने के लिए विनिर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्धारित प्रारूप के अनुसार प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत उन निवेदनों को भी नोट किया है कि वैट्रीफाइड टाइलों के अनेक उपभोक्ताओं / व्यापारियों और प्रयोक्ताओं ने प्रारंभिक निष्कर्षों से पहले विचार किए जाने हेतु विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचनाएं प्रस्तुत की थीं जिनकी पावती नहीं भेजी गई है। प्राधिकारी ने कुछ हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त अभ्यावेदनों को भी नोट किया है कि उनको सार्वजनिक सुनवाई के लिए आमंत्रित नहीं किया गया।
- (ii) प्राधिकारी इस संबंध में यह मानते हैं कि नियम 6 के अनुसार प्रश्नावली प्रस्तुत करना और सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेना दोनों अलग-अलग जिम्मेदारियां हैं और यह जांच तथा प्राकृतिक न्याय के हित में है कि किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा निर्यात मूल्य के मुद्दे के संबंध में इस प्रकार सूचना प्रस्तुत न किए जाने पर भी वही मुद्दे के संबंध में निवेदन कर सकता है जो उसके उत्तर से संबंधित न हो चाहे उसने उसे प्रस्तुत भी किया हो। प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि यद्यपि संबद्ध देश से उत्तम गुणवत्ता वाली टाइलों की काफी उपलब्धता की दृष्टि से पाटनरोधी शुल्क न लगाने के पक्ष में विभिन्न वास्तुकारों / डीलरों / प्रयोक्ताओं द्वारा विभिन्न निवेदन किए गए थे परंतु पाटनरोधी शुल्क लगाने के समर्थन में भी अनेक निवेदन प्राप्त हुए हैं। पाटनरोधी शुल्क का समर्थन करने वालों ने यह सूचित किया है कि संबद्ध देश से होने वाले आयात घटिया गुणतायुक्त हैं जिनकी वस्तु सूची में कम कीमत दी गई है और घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रहार कर रहे हैं।
- (iii) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध जिनकी प्राधिकारी द्वारा संबंधित पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत जांच की जानी है, के विशिष्ट तकनीकी पहलूओं की अपेक्षा पाटनरोधी शुल्क लगाने के समर्थन में अथवा विरोध में ये परंपरागत मुद्दे हैं। इसलिए, प्राधिकारी ने उन मुद्दों की जांच की है जो जांच से संबंधित हैं और जो जांच के नाजुक मानदंडों को प्रभावित करते हैं। प्राधिकारी ने अपने पहले के निर्धारणों में यथाविचारित माल की अधिक उपलब्धता और बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा के पहलू का निराकरण

करने की अनुकूल प्रथा को ध्यान में रखते हुए उपमोक्ताओं की पसंद और गुणवत्ता से संबंधित निवेदनों पर विचार किया है। जहां तक उन व्यक्तियों का संबंध है जिन्होंने यह सूचित किया है कि उन्होंने सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था, प्राधिकारी ने उपर्युक्त पैरा में की गई टिप्पणियों को ध्यान में रखते हुए उनके निवेदनों में यथाप्रस्तुत जांच से संबंधित संगत मुद्दों को शामिल किया है।

- (iv) जहां तक मामला शुरू करने के विरोध का संबंध है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह मामला नियम 5(3) (क) और (ख) के अनुसार शुरू किया गया था। चीन जनवादी गणराज्य से पाटन करने के तथ्य पर कोई विवाद नहीं है। क्योंकि कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है और यू.ए.ई. से पाटन के प्रथमदृष्टया साक्ष्य का संदर्भ कीमत सूची के आधार पर दिया गया था जो कोई जांच शुरू करने के प्रयोजन के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं। विशिष्ट उत्पादों को अलग रखने और पाटन तथा क्षति की उचित तुलना से संबंधित मामले पर अंतिम जांच परिणामों में उचित रूप से कार्यवाही की गई है।
- (v) प्रकटन विवरण के उत्तर में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है और अंतिम जांच परिणामों में उचित रूप से कार्यवाही की गई है।

5. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

(क) घरेलू उद्योग के विचार

- (i) विचाराधीन उत्पाद का वर्णन तकनीकी विनिर्दिष्टाओं, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर किया गया है। 3% से कम अथवा इसके बराबर जल सोखने का मानदंड भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर आधारित है। हम यह दोहराना चाहेंगे कि विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र में शामिल सभी टाइलों को पाटनरोधी शुल्क के अध्याधीन लाया जाना चाहिए चाहे उनका सीमाशुल्क वर्गीकरण कोई भी हो जिनके अंतर्गत उन्हें स्वीकृति दी जाती है।
- (ii) याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि सभी प्रकार की शीसा रहित टाइलें अध्याय शीर्ष 69.07 में वर्गीकृत हैं। तथ्य शीसा रहित टाइलें भी पोर्सिलेन की अन्य वस्तुओं की तरह अध्याय शीर्ष 69.14 के अन्तर्गत आयात हो रही हैं। इसके अलावा जी पी टाइल्स, पोर्सिलेन टाइल, ग्रेस पोर्सिलेनाटो टाइल्स, पोर्सिलेन विट्रिफाइड टाइल्स इत्यादि जैसे विभिन्न वर्गीकृत टाइलों के साथ अध्याय शीर्ष 69.14 के अन्तर्गत शीसायुक्त पोर्सिलेन टाइलों के आयात हो रहे हैं। आगे यह बताया गया है कि अध्याय शीर्ष 69.14 के अन्तर्गत आयात हो रहे शीसायुक्त पोर्सिलेन टाइलें, विशेषताओं, उपयोगों, कार्यों, वितरण चैनलों इत्यादि के रूप में अध्याय शीर्ष 69.07 की शीसा रहित टाइलों के साथ प्रतिस्थापनीय हैं। याचिकाकर्ताओं ने आगे यह अनुरोध किया है कि शीसायुक्त टाइलें कई आयातकों द्वारा अध्याय शीर्ष 69.14 के अन्तर्गत गलत ढंग से वर्गीकृत किए जा रहे हैं। ये उत्पाद सही में शीसायुक्त टाइलों की तरह अध्याय शीर्ष 69.08 के अन्तर्गत वर्गीकृत करने योग्य हैं। अतः याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि जिस वर्गीकरण के अधीन इनका आयात किया जा रहा है, पर विचार न करते हुए विचाराधीन उत्पाद के विरुद्ध जांच की जाए।
- (iii) रॉक सिरामिक्स के काउंसिल द्वारा दिए गए इस तर्क के संबंध में घरेलू उद्योग 98x98 से.मी. अथवा 120x120 से.मी. के आकार की विट्रिफाइड टाइलें नहीं बनाता है। यह निवेदन है कि इन आकारों की घरेलू उद्योग की उत्पाद श्रृंखला के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा है और यह पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत "समान वस्तु" की व्याप्ति में उचित रूप से शामिल हो जाएंगे। रॉक का यह दावा कि घरेलू उद्योग रस्टिक, स्मॉन, ऑफिशियम, एंटिका, मोसाइको, मेटलिका, अल्हमरा आदि नहीं बनाता है, का कोई संबंध नहीं है क्योंकि यह नाम उनके डिज़ाइनों को दिए गए हैं। हमारे संयंत्र उसी डिज़ाइन और प्रभावों की वस्तु बना सकते हैं और इसलिए इस बात से

सहमत होने का कोई कारण नहीं है कि कुछ विनिर्माण विशिष्ट डिज़ाइन नामों को अलग रखा जाए।

(ख) मैसर्स त्रिशला डिस्ट्रिब्यूटर्स के विचार:

(i) जांचाधीन उत्पाद 3% तक जल सोखने वाली विट्रिफाइड या पोर्सेलीन टाइलें हैं। याचिकाकर्ता भी 0.5% तक के स्तर के जल सोखने वाली विट्रिफाइड टाइलों का निर्यात करते हैं। यह टाइलें अनेक आकारों, रंगों और डिज़ाइनों में बेची जाती हैं और उनकी लागतें तथा कीमतें भिन्न-भिन्न होती हैं। इस मामले को उन याचिकाकर्ता कंपनियों द्वारा अनदेखा कर दिया गया जिन्होंने अपने उत्पादों को ऐसी कीमतों पर बेचा जिनमें प्रति मीटर का उल्लेखनीय अंतर था, आसानी से सभी अलग-अलग किस्मों के उत्पादों को इकट्ठा नहीं किया जा सकता।

(ii) जांच के कार्यक्षेत्र की स्पष्ट रूप से परिभाषा नहीं की गई है। वर्तमान जांच में भी सिरामिक मोज़ाइक टाइलों को शामिल करने की प्रवृत्ति है।

(ग) मैसर्स केंट सिरामिक टाइल कं0 प्रा0 लि0 और मै0 कजरिया सिरामिक के विचार

(i) विचाराधीन उत्पाद में उनके किस्में शामिल हैं। इसमें सिरामिक मोज़ेक टाइलें भी शामिल हैं जो वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं और विट्रिफाइड टाइलों के अपेक्षा बहुत कम कीमतों पर आयात की जाती हैं।

(ii) इन टाइलों की अलग-अलग विशेषताएं, स्टाइल, कीमतें और प्रयोग हैं। आई एस ओ 13006 टाइलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक और इसमें विभिन्न श्रेणी की टाइलों को ए:एक्सट्रयूडस, बी: ड्राइप्रेसड और सी: अन्य प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित टाइलें हैं। जल सोखने की क्षमताओं के आधार पर इसमें उन्हें ग्रुप 1 से ग्रुप 3 के अंतर्गत मान्यता दी गई है। इन श्रेणियों को उपश्रेणियों के अंतर्गत भी वर्गीकृत किया गया है।

(iii) याचिकाकर्ताओं द्वारा अपनाए गए उत्पाद विवरण में विभिन्न मूल्यों के उत्पाद शामिल हैं। 60X60 टाइल के लिए एसआर जे की पोर्सेलीनों श्रृंखला की कीमत 884 रुपये प्रति वर्ग मी. है और चीनी विट्रिफाइड टाइलों का अधिकतम खुदरा मूल्य 1022 रु0 प्रति वर्ग मी. है। हालांकि टाइलों की एचआर जो मर्गोनाइट श्रृंखला का अधिकतम खुदरा मूल्य 1111 /- रु0 प्रति वर्ग मी. है परंतु पोर्सेलीनों की एचआरजे श्रृंखला और एचआरजे की मर्गोनाइट श्रृंखला जो दोनों

उत्पाद विवरण के अंतर्गत आती है की परस्पर पोर्सेलीनों श्रृंखला के साथ स्पष्ट प्रतिस्पर्द्धा है जिनकी कीमतें आयातों से भी कम होती हैं।

- (iv) यह निवेदन है कि सिरामिक मोज़ेक टाइलों को पाटनरोधी शुल्क से छूट दी जाए और इन कार्यवाहियों को नियम 14(ख) के अंतर्गत समाप्त कर दिया जाए तथा चीन से किए जाने वाले आयातों पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं होना चाहिए तथा संदर्भ कीमत कम होनी चाहिए क्योंकि पाटन मार्जिन की गणना गलत ढंग से की गई है।

(घ) मै0 निटको टाइल्स के विचार:

विचाराधीन उत्पाद की पर्याप्त ब्यौरों में परिभाषा नहीं की गई है ताकि प्राधिकारी पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की विद्यमानता का विश्लेषण कर सके। विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा निर्यातक को प्रश्नावली भेजने से पहले उचित रूप से करनी चाहिए और यह कार्य घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति तथा कारणात्मक संबंध के लिए भी किया जाना चाहिए। चूंकि यह कार्य नहीं किया गया है इसलिए जांच को समाप्त कर देना चाहिए।

(ङ) मै0 रॉक सिरामिक्स, यूएई के विचार:

98X98 से.मी. अथवा 120X180 से.मी. के कुछ मॉडल अथवा रस्टीक, स्टोन, एंटिका, मोसाइक, ओफिसियम, मेटेिका ए1-हम्ब्रा आदि जैसी अन्य टाइलों की किस्में हैं, जिनके लिए घरेलू उद्योग के पास उत्पादन सुविधा, प्रौद्योगिकी और ज्ञान नहीं है। इस सीमा तक, इन उत्पादों के लिए कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

(च) मै0 अल-खलीज सिरामिक्स, यूएई के विचार:

प्राधिकारी ने एकपक्षीय रूप से और बिना अवसर के मोसाइक सिरामिक टाइलों के संबंध में आंकड़ों पर विचार करते हुए इसके प्रारंभिक कार्यक्षेत्र से आगे कार्यवाहियां चलाई, जो मूलरूप से प्रारंभ की गई कार्यवाही की कभी कोई विषयवस्तु नहीं थी।

6. प्राधिकारी द्वारा जांच

- (i) प्राधिकारी नोट करते हैं कि 3 दिसम्बर, 2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा च. में विचाराधीन उत्पाद को "संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित पालिश की गई अथवा बिना पालिश के तैयार बिना चमकीली तथा

चमकदार पोर्सलेन / सिरामिक टाइलें हैं, दोनों 3% से कम जल-अवशोषण वाली हों (जिन्हें आमतौर पर विट्रिफाइड / पोर्सलेन टाइल कहा जाता है)। अनेक हितबद्ध पार्टियों ने यह संकेत दिया है कि जांचाधीन वस्तु काफी व्यापक है तथा इसे जांच शुरू करने के समय ही इसका वर्गीकरण विभिन्न ग्रेडों, मॉडलों, आकारों इत्यादि के अंतर्गत करना चाहिए। कुछेक हितबद्ध पार्टियों द्वारा यह भी इंगित किया गया है कि मोजाइक टाइल्स जोकि विट्रिफाइड टाइल्स से भिन्न हैं, को भी जांच क्षेत्र में शामिल किया गया है। एक हितबद्ध पार्टी द्वारा यह भी स्वीकार किया गया है कि रस्टिक, स्टोन, एंटिका, मोजाइक, ऑपटीसियम, मेटेलिका एवन-हेम्ब्रा जैसी कुछ उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली टाइलों का विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जा रहा है। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों में यथापरिभाषित विचाराधीन उत्पाद पर विचार करने के लिए विभिन्न अनुरोधों पर गौर किया है। मोजाइक टाइलों को अलग रखने से संबंधित तर्क के बारे में यह दोहराया जाता है कि जांच के क्षेत्र से मोजाइक टाइलों को अलग रखा जाएगा जो 3.12.01 के प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा च में यथापरिभाषित विचाराधीन उत्पाद की श्रेणी में नहीं आएगी। विट्रिफाइड टाइलों को विशिष्ट रूप से 3% से कम जल अवशोषक वाली टाइलों के रूप में परिभाषित किया गया है और इस उत्पाद को उस सीमा तक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है तथा प्राधिकारी अंतिम जांच परिणामों में उसकी पुष्टि करते हैं। निर्यातक मै0 रॉक सिरेमिक्स, यूआई द्वारा प्रदान किए गए टाइलों के नाम वाणिज्यिक नाम हैं और जांच के दायरे से बाहर रखने के लिए उनके साथ उचित साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है।

- (ii) घरेलू उद्योग इस दावे कि संबद्ध वस्तुओं का आयात भिन्न-भिन्न सीमा शुल्क वर्गीकरण के अंतर्गत किया जा रहा है, के संबंध में प्राधिकारी अपनी संगत स्थिति को दोहराते हैं कि पाटनरोधी जांच विचाराधीन सीमाशुल्क वर्गीकरण पर विचार न करते हुए उत्पाद के संबंध में है। जब तक आयातित उत्पाद अपने विचाराधीन उत्पाद होने की पुष्टि करता है उस पर पाटनरोधी शुल्क लगेगा। सीमाशुल्क वर्गीकरण मात्र संकेतात्मक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।
- (iii) जहां तक उत्पाद के श्रेणीकरण के मुद्दे का संबंध है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि श्रेणीकरण का पहले डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 2.4 तथा भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 6 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के पैरा (VI) के अनुसार पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु संगत है। तथापि श्रेणीकरण के पहलू से 3 दिसम्बर, 2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा च में परिभाषित विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा और उसका क्षेत्र विस्तार परिवर्तित नहीं होता है।
- (iv) पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) जो "समान वस्तु" को पारीभाषित करता है, के संबंध में निर्यातकों - आयातकों ने यह तर्क दिया है कि उनके द्वारा आयातित टाइलें अलग किस्म की हैं। तथापि उनके द्वारा यह दर्शाने के लिए कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है कि आयातित टाइलें तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से देश में उत्पादित टाइलों का स्थान ले रही हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विट्रिफाइड / पोर्सलीन टाइल्स में संबद्ध देशों से आयातित टाइल्स से मिलती-जुलती विशेषताएं हैं। वितरण की श्रृंखला, अंतिम उपयोग आदि भी यह संकेत करते हैं कि आयातित टाइलें विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु हैं। उपरोक्त के मददेनजर, प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विट्रिफाइड / पोर्सलीन टाइलें तथा संबद्ध देशों से आयातित टाइलें नियमों के अर्थ के भीतर "समान वस्तु" हैं।

(ख) **घरेलू उद्योग**

- (i) पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार "घरेलू उद्योग का तात्पर्य ऐसे घरेलू उत्पादकों से है जो समग्र रूप से समान वस्तु के विनिर्माण में तथा उससे संबंधित किसी कार्यकलाप में लगे हुए हैं या उन उत्पादकों से है जिनका उपर्युक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन, उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है। जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित होंगे अथवा वे स्वयं उस वस्तु के

आयातक होंगे तो उस मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा'।

- (ii) घरेलू उद्योग की ऊपर दी गई परिभाषा को नियमावली के नियम 5 द्वारा आगे और स्पष्ट किया गया है जो निम्नानुसार है:—

“—————आवेदन को उस स्थिति में घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से किया गया माना जाएगा यदि उसका समर्थन उन घरेलू उत्पादकों द्वारा किया गया हो जिनका सामूहिक उत्पादन उक्त आवेदन का समर्थन अथवा विरोध (जैसा भी मामला हो) करने वाले घरेलू उद्योग के उस भाग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन के 50% से अधिक बनता हो”।

(iii) घरेलू उद्योग का आधार

प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त अनुरोध नियम 5 के तहत जांच की गलत शुरुआत के बारे में किए गए हैं। आधार के मुद्दे पर कुछ हितबद्ध पार्टियों द्वारा भी तर्क दिया गया है जिसका संबंध विचाराधीन उत्पाद को विशिष्ट रूप से श्रेणीबद्ध न किए जाने के बारे में है। विचाराधीन उत्पाद के बारे में उपर्युक्त स्पष्टीकरण को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी घरेलू उद्योग के आधार की पुष्टि करते हैं जैसाकि 3.12.01 के प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा ज में निर्णय लिया गया है। चूंकि विचाराधीन उत्पाद अपरिवर्तित है, आधार के मुद्दे पर पुनः विचार अपेक्षित नहीं है इसीलिए प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों में यथापरिभाषित आधार की पुष्टि करते हैं।

घ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

7. धारा 9 क (1)(ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की समुचित तुलना नहीं हो सकती हो, तो सामान्य मूल्य या तो:—

- (क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किये जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या
- (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत जिसमें प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि की गई हो।
- (ग) किन्तु यदि उद्गम वाले देश से इतर किसी देश से उक्त वस्तु का आयात किया गया हो और जहाँ उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरित किया गया हो अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं किया गया हो अथवा निर्यात के देश में उसका कोई तुलनीय मूल्य न हो तो सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी बिक्री के संदर्भ में किया जाएगा।
- (घ) प्राधिकारी ने उपर्युक्त धारा के अनुसार जांच से संगत सूचना प्रस्तुत करने और टिप्पणी यदि कोई हो प्रस्तुत करने के लिए सम्बद्ध देशों के निर्यातकों को अवसर प्रदान किया। प्राधिकारी ने भारत में स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों को भी सूचित किया।

8. घरेलू उद्योग के विचार:

- (i) मै0 रॉक सिरेमिक, जो यूई का एकमात्र सहयोगी निर्यातक है, ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि वे भारत को तीसरी और चौथी गुणवत्ता वाली तथा अवशिष्ट ग्रेडों एवं गुणवत्ता युक्त टाइलों की आपूर्ति कर रहे हैं। अतः मै0 रॉक सिरेमिक्स न केवल पाटित कीमतों में संलिप्त है बल्कि भारत में घटिया वस्तु का पाटन भी कर रहे हैं।
- (ii) विचाराधीन उत्पाद डीजीसीआईएण्डएस के किसी अन्य शीर्ष के अंतर्गत नहीं आता है और इसीलिए घरेलू उद्योग को निर्यातक सूचना संकलित करने के लिए डीजीसीआईएण्डएस के भिन्न स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ा था। डब्ल्यूटीओ करार के अनबंध II के पैरा 7 के तहत गौण आंकड़ों का प्रयोग करते समय विशेष सावधानी बरतने के लिए प्राधिकारियों को केवल आयात किया गया है। चूंकि निर्यातक ने सकल सूचना प्रस्तुत की है इसीलिए प्राधिकारी ने नियम 6(8) का सहारा लिया है।

- (iii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने स्वयं निर्यातक की कीमत सूची पर विश्वास किया है और इसीलिए अनुबंध 2 के पैरा 7 की अपेक्षाओं की पूर्ति भी हो जाती है।
- (iv) मै0 रॉक सिरेमिक्स द्वारा यह आरोप लगाया गया है कि सामान्य मूल्य के बारे में प्रथमदृष्टया सक्षय कानून की दृष्टि में दोषपूर्ण हैं क्योंकि यूई के उत्पादकों में से एक उत्पादक की अनिर्धारित कीमत सूची पर विश्वास किया गया है। आयातकों ने यह भी उल्लेख किया है कि यह सक्षय दोषपूर्ण है क्योंकि याचिकाकर्त्ताओं ने निष्पादित संविदा का एक भी सक्षय प्रस्तुत नहीं किया है। बातचीत शुदा कीमत के मददेनजर घरेलू उद्योग से दो वाणिज्य कंपनियों के गोपनीय दस्तावेज हासिल करने के बारे में कानूनन अथवा प्रक्रिया के अनुसार अपेक्षा नहीं की जा सकती। आवेदन प्रपत्र के पैरा III के पैरा 1 (क) के अनुसार कीमत सूची निर्यात बाजार में सामान्य मूल्य का उचित संकेत हो सकते हैं।
- (v) मै0 रॉक सिरेमिक्स द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को मामला शुरू करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को मॉडलवार सूचना प्रस्तुत की जानी चाहिए थी। इस संबंध में डब्ल्यू टी ओ के अनुच्छेद 2.4 का उल्लेख किया गया था। अनुरोध है कि अनुच्छेद 2.4 पर मै0 रॉक सिरेमिक्स का विचार करना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह केवल पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना से ही संबंधित है। निर्यात और घरेलू उद्योग के उत्पादों के मॉडलों के बीच इस प्रकार की तुलना का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। हम इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी से प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करने का अनुरोध करते हैं।

9. बिल्डर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के विचार:

- (i) दिलीपशाह, भागीदार के मार्फत सर्फेसिज प्लस बनाम भारत संघ के मामले में अहमदाबाद स्थित माननीय गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा विशेष सिविल आवेदन सं० 2001 का 11935 के साथ-साथ सिविल आवेदन सं० 2002 का 96 और सिविल आवेदन सं० 2002 का 148 पारित आदेश में यह निर्णय लिया गया था कि:—

“हमने अपने दि० 27.12.2001 के पूर्ववर्ती आदेश द्वारा याचिकाकर्त्ता (मै० सर्फेसिज प्लस, श्री दिलीप शाह भागीदार के मार्फत) को प्रारंभिक जांच परिणाम पर केन्द्र सरकार को अभ्यावेदन देने की अनुमति दी थी। तथापि. इस स्तर पर हम केन्द्र सरकार को यह निर्देश देते हैं कि वह कानून के अनुसार अनंतिम

शुल्क की सूचना जारी करने से पूर्व याचिकाकर्ता के अभ्यावेदन पर विचार करे। इस हस्तक्षेपकर्ता को अन्य पार्टियों के साथ-साथ अभ्यावेदन करने का अवसर भी प्रदान किया जाएगा।

- (ii) किन्तु हमें खेद सहित यह ज्ञात हुआ है कि चीन और यूएई से ऐसी टाइलों के आयात पर 300% का अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगा दिया गया है। यह स्पष्ट नहीं है कि किस प्रकार समस्त विट्रिफाइड टाइलों के लिए 13.62 अमरीकी डालर प्रति वर्ग मीटर की एकीकृत कीमत कैसे निकाली जा सकती है जो आकार, डिजाइन, सजावट पद्धति आदि जैसे विभिन्न अन्य मामलों में एक दूसरे से अलग-अलग हो सकती है।

10. मै0 त्रिशला डिस्ट्रिब्यूटर्स के विचार

मै0 रॉक सिरेमिक्स के मामले में सामान्य मूल्य कीमत सूची के आधार पर लिया गया है जो केवल प्रस्ताव कीमत है और उसमें प्रस्तुत गुणवत्ता तथा प्रतिस्पर्धा के आधार पर आगे और छूट दी जा सकती है। कीमत सूचियां भी स्थायी नहीं होती है। पाटन मार्जिन का मूल्यांकन निर्यातकों की घरेलू बिक्री कीमत पर गौर करते हुए सी.शु.टैरिफ अधिनियम, 1975 के उपबंधों के अनुसार करना होता है।

11. मै0 केंट सिरेमिक टाइल्स कं0 प्रा0 लि0 तथा मै0 कजारिया सिरेमिक्स के विचार

- (i) याचिकाकर्ताओं द्वारा उक्त सूचना इंटरनेशनल बिजनेस इन्फार्मेशन सर्विस से ली गई है। याचिकाकर्ता ने निर्यात कीमत में मोजाइक टाइल्स की आयात कीमत भी शामिल की है जिससे पहुंच मूल्य कम हो गया है। याचिकाकर्ता ने इस कमी को पूरा करने की मांग की है कि आयातक को ऐसी सूचना प्रस्तुत करनी चाहिए। इस उपबंध के तहत याचिकाकर्ताओं पर सिद्ध करने का भार होता है और उस स्थिति में कार्रवाई शुरू नहीं की जा सकती जहाँ याचिकाकर्ता कार्रवाई के दौरान आवश्यक सूचना एकत्र करने की आशा करता है।

- (ii) विवाद निपटान निकाय ने अर्जेटीना द्वारा की गई कार्रवाई में इटली से सिरेमिक फ्लोर टाइलों के बारे में अक्टूबर, 2001 में पैनल रिपोर्ट जारी की है। उक्त रिपोर्ट में यह देखा जाता है कि आकार के आधार पर तीन अलग-अलग श्रेणियां हैं और पाटन मार्जिन तथा अन्य मुद्दों का निर्धारण तीन श्रेणियों पर आधारित है। याचिकाकर्ता उत्पाद का उचित श्रेणीकरण करने में विफल रहा है और परिणामतः समूची कार्रवाई गलत है। बिक्री मात्रा, बिक्री मूल्य, प्रति यूनिट प्राप्ति, क्षमता उपयोग तथा उत्पादन से संबंधित संकेतक घरेलू उद्योग के लिए

सकारात्मक रहे हैं। आयात भी घरेलू मांग का 3.36% बनाते हैं। स्वदेशी उत्पादन की औसत बिक्री कीमत निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्धारित की गई संदर्भ कीमत से अधिक है।

- (iii) संदर्भ कीमत पर पाटनरोधी शुल्क की लेवी स्वीकार्य नहीं है क्योंकि ऐसी स्थितियां हो सकती हैं जिनमें लागू लेवी पाटन मार्जिन तथा जांच अवधि के दौरान यथानिर्धारित मार्जिन, दोनों से अधिक हों।
- (iv) जहां तक गौण स्रोतों से सूचना का संबंध है, याचिकाकर्ता द्वारा निर्यात कीमत पुनः निकाली गई है। इन परिस्थितियों में खासकर इस बात को ध्यान में रखते हुए सावधानी बरती जाए कि इन आंकड़ों को स्वीकार करने में याचिकाकर्ता द्वारा गौण स्रोत की सूचना भी पुनः निर्धारित की गई है।

12. मै0 रॉक सिरेमिक्स, यू.ए.ई. के विचार

- (i) याचिकाकर्ताओं ने देर से अनुच्छेद 2.4 के उपबंधों को स्वीकार किया है। अनुच्छेद 2.4 के उपबंध कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री मार्जिन पर भी स्वतः लागू होंगे जिनके लिए माडल-दर-माडल, ग्रेड-दर-ग्रेड तुलना करनी होती है और तत्पश्चात् वस्तुतः शून्य पर आए बिना भारित औसत मार्जिन निकालना होता है। घरेलू उद्योग में माडल-दर-माडल उत्पादन लागत संबंधी सूचना के अभाव में यह निर्धारित करना भी कठिन होगा कि क्या तुलना में प्रयुक्त माडल की घरेलू बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में हैं अथवा नहीं।
- (ii) प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद मै0 रॉक सिरेमिक्स ने अगोपनीय आधार पर अपने विभिन्न माडलों एवं ग्रेडों के तकनीकी विनिर्देशनों, घरेलू तथा भारत को निर्यातों के लिए बिक्री कीमत संरचना, कच्ची सामग्री खपत तथा जांच अवधि में बिक्री तथा विभिन्न ग्रेडों की उत्पादन लागत का विवरण देते हुए गोपनीय आधार पर निर्यातक प्रश्नावली के संबंध में अतिरिक्त सूचना प्रस्तुत की है।
- (iii) मै0 रॉक ने माडल दर माडल तथा ग्रेड दर ग्रेड आधार पर लागत की गणना के समर्थन में गौण स्रोत से लागत सिद्धांतों को गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराया है। विशिष्ट माडल अथवा ग्रेड के लिए यथामूल्यांकित उत्पादन लागत का उपयोग करते हुए तुलना भी प्रस्तुत की गई है जिसमें भारित औसत पाटन मार्जिन का उल्लेखन किया गया है जिसे न्यूनतम माना गया है।
- (iv) जिन आधारों पर प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ निर्यातकों के आंकड़ों को अस्वीकृत किया गया है वे अप्रमाणिक, आधारहीन और त्रुटिपूर्ण हैं। मै0 रॉक

ने उनके द्वारा दायर गोपनीय सूचना का अगोपनीय सारांश उपलब्ध किया है और केवल व्यापारिक सूचना ऐसी है जिसे गोपनीय रूपांतर में उपलब्ध नहीं कराया गया है।

- (v) मै0 रॉक को ऐसे किसी अन्य साक्ष्य अथवा सूचना के बारे में कभी सूचित नहीं किया गया था जिसे प्राधिकारी द्वारा मांगा गया था और यह कि प्रत्युत्तर के साथ प्रस्तुत सूचना को कारणों सहित रद्द किया जा रहा है और यह भी कि कोई स्पष्टीकरण देने अथवा कोई अन्य सूचना प्रदान करने के लिए उन्हें कोई अवसर प्रदान नहीं किया गया था। उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना को अस्वीकृत किया जाना डब्ल्यू टी ओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 17.6 के उपबंधों के असंगत भी है।
- (vi) दिनांक 16.12.02 तथा 17.12.02 के पत्र द्वारा मै0 रॉक सिरेमिक्स ने पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय के 1.11.02 तथा 15.11.02 के पत्र का उत्तर दिया है तथा सामान्य मूल्य, उत्पादन लागत और समायोजनों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है।

13. मै0 अलरेवॉलिज सिरेमिक्स यू ए ई

संदर्भ कीमत की पद्धति के परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी जिसमें पाटनरोधी शुल्क की लेवी क्षति एवं पाटनमार्जिन के न्यूनतम स्तर से अधिक हो जाएगी। यह डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 9.1 और 9.3 के तहत अस्वीकार्य है।

14. प्राधिकारी द्वारा जांच

(i) मै0 रॉक सिरेमिक्स, यूएई

प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद निर्यातक ने ग्रेडों के श्रेणीकरण, कच्ची सामग्री तथा उत्पादन लागत, घरेलू बिक्री प्राप्ति के मिलान की योजना का उल्लेख करते हुए 29.12.01 तथा 25.6.02 के पत्रों द्वारा सूचना प्रस्तुत की थी और उस सिद्धांत का उल्लेख किया था जिसके अनुसार उन्होंने संयुक्त लागत सिद्धांतों के अनुसार अलग-अलग ग्रेडों तथा टाइलों की उत्पादन लागत का मूल्यांकन किया था। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सार्वजनिक सुनवाई के बाद निर्यातकों के परिसरों पर आंकड़ों के सत्यापन हेतु 19 और 20 अगस्त, 2002 की स्थापन तारीखों को निर्यातक के परामर्श से अंतिम रूप दिया गया था। जब कुछ प्रशासनिक कारणों से 19 और 20 अगस्त, 2002 को सत्यापन नहीं किया जा सका तब सत्यापन तारीखें 31 अगस्त और 1 सितम्बर,

2002 सहमति से तय की गई थीं। तथापि 28.4.02 के फैक्स द्वारा मै0 रॉक सिरेमिक्स ने पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय को यह सूचित किया कि सत्यापन की कार्यवाई को दो माह तक अक्टूबर, 2002 के अंत तक स्थगित करने की जरूरत है। प्राधिकारी ने नवम्बर, 2002 के पत्र द्वारा निर्यातक से अतिरिक्त सूचना तथा स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने की इच्छा व्यक्त की थी जिसमें यह शामिल था कि खण्ड 8 परिशिष्ट 4 में दी गई सूचना तथा अनुरोधों के खण्ड 4 में दी गई सूचना मेल नहीं खाती है और यह कि टाइलों के आकार, ग्रेड और मॉडल का उल्लेख करते हुए निर्यात और घरेलू बिक्रियों के बीजकों के नमूने प्रस्तुत किए जायें। क्रेताओं के उचित बीजक / नाम तथा अंतिम प्रयोक्ताओं को बिक्री से संबंधित साक्ष्य ताकि व्यापार के स्तर पर विचार किया जा सके। समायोजन, छूट से संबंधित दस्तावेजों, भाड़ा एवं घरेलू बिक्रियों से संबंधित पैकिंग, घरेलू बिक्रियों पर ऋण लागत संबंधी साक्ष्य भी मांगे गए थे। बाद में प्राधिकारी ने 15 नवम्बर, 2002 के पत्र द्वारा परिशिष्ट 8,9 और 10 में जांच अवधि के दौरान विनिर्मित ऐसे टाइलों के भिन्न-भिन्न आकारों / टाइलों की औसत लागत से संबंधित सूचना मांगी थी। यह बताया गया था कि इन परिशिष्टों में उल्लिखित लागत को, लेखा बहियों एवं लाभ एवं हानि खाते से भी मेल खाना चाहिए। 5 दिसम्बर, 2002 के पत्र द्वारा निर्यातक के प्रतिनिधि ने प्राधिकारी द्वारा भेजे गए 1 नवम्बर 2002 तथा 15 नवम्बर, 2002 के पत्रों से संबंधित सूचना दायर करने के लिए 10 दिन का समय मांगा था। उसके बाद 16.12.02 तथा 17.12.02 के पत्र द्वारा निर्यातक के प्रतिनिधि ने 1 नवम्बर 2002 तथा 15 नवम्बर, 2002 के पत्रों के उत्तर में सूचना दायर की। निर्यातक द्वारा स्पष्टीकरण भी उपलब्ध कराए गए थे। तत्पश्चात् प्राधिकारी ने 6 /7 जनवरी, 2003 को मै0 रॉक सिरेमिक्स के परिसरों पर सत्यापन किया तथा उत्पादन लागत एवं घरेलू और बिक्री कीमत से संबंधित समायोजन का सत्यापन किया।

प्रकटन विवरण के उत्तर में निर्यातक ने अंतिम प्रयोक्ता तथा घरेलू बाजार में व्यापारियों के बीच विशेष आकार की ग्रेडवार, मॉडलवार बिक्री की विस्तृत तुलना उपलब्ध कराकर व्यापार के स्तर के कारण समायोजन से संबंधित अपने दावे की पुष्टि करने, उसे न्यायोचित ठहराने की पुनः कोशिश की है। चूंकि मै0 रॉक द्वारा यह सूचना सत्यापन तथा प्रकटन विवरण जारी होने के बाद प्रस्तुत की गई है इसलिए प्राधिकारी का मानना है कि इस स्तर पर उसे स्वीकार करना उचित नहीं है। इस प्रकार व्यापार के स्तर के कारण समायोजन के बारे में निर्यातक के दावे पर विचार नहीं किया गया है।

सामान्य मूल्य

- (क) प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने उसके द्वारा विनिर्मित और निर्यातित विट्रिफाइड टाइलों के भिन्न-भिन्न ग्रेडों के लिए अलग-अलग उत्पादन लागत

का दावा किया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि उत्पादन लागत के विभाजन के बारे में निर्यातक द्वारा अपनाया गया सिद्धांत वास्तविक नहीं है। प्रत्येक ग्रेड के विनिर्माण में आई प्रत्यक्ष लागत के अनुपात का निर्धारण बाजार से कम बिक्री प्राप्ति यदि कोई हो, के आधार पर नहीं किया जा सकता। प्राधिकारी ने बिक्री तथा वितरण एवं ब्याज लागत को छोड़कर आकारवार वास्तविक लागत पर विचार किया है तथा प्रत्येक आकार/ ग्रेड /मॉडल के लिए बिक्री प्राप्ति के आधार पर बिक्री तथा वितरण एवं ब्याज लागत के अनुपात का निर्धारण किया है।

- (ख) इस बात को ध्यान में रखते हुए विट्रिफाइड टाइलों के किसी विशेष आकार से संबंधित ग्रेडवार /मॉडलवार उत्पादन लागत का मूल्यांकन किया गया है। इसके अलावा चूंकि टाइलों का उल्लेख पालिश की गई और पालिश न की गई टाइलों के रूप में किया गया है इसलिए पालिश की गई पालिश न की गई टाइलों का मूल्यांकन भी अलग-अलग किया गया है। अतः प्राधिकारी ने पालिश की गई तथा पालिश न की गई दोनों टाइलों के लिए ग्रेडवार /मॉडलवार विट्रिफाइड टाइलों के अलग-अलग आकारों के लिए उत्पादन लागत का मूल्यांकन किया है। प्राधिकारी ने कच्ची सामग्री, उपयोगिता, श्रम लागत, मूल्य ह्रास एवं विट्रिफाइड टाइलों के प्रत्येक आकार के लिए विनिर्माण संबंधी ऊपरी खर्चों सहित उत्पादन लागत पर विचार किया है। एस जी ए तथा ब्याज लागत का आबंटन टाइलों के अलग-अलग मॉडलों तथा ग्रेडों के बिक्री मूल्य के आधार पर किया गया है ताकि टाइल के प्रत्येक ग्रेड /मॉडल टाइल की कुल लागत निकाली जा सके। सत्यापन के दौरान यह नोट किया गया था कि निर्यातक द्वारा उत्पाद विट्रिफाइड टाइलों की घरेलू और निर्यात, दोनों बाजारों में बिक्री विभिन्न ग्रेडों में की जा रही है। यह घरेलू तथा निर्यात बिक्रियों के वाणिज्यिक दस्तावेजों से भी प्रमाणित हुआ था। इसके अलावा, सिरैमिक टाइलों के अलग-अलग ग्रेड उत्पादन तथा छंटाई प्रक्रिया के दौरान इनकी भौतिक विशेषताओं के संबंध में अलग-अलग थे। घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा उपलब्ध किए गए आंकड़ों से घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं बिक्री से संबंधित गुणवत्ता के आधार पर ग्रेडों के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के श्रेणीकरण का साक्ष्य मिलता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि विट्रिफाइड टाइलों के ग्रेड स्पष्टतः अलग-अलग हैं, प्राधिकारी ग्रेड स्तर पर अलग-अलग आकारों /मॉडलों के लिए अनुबंध 1 के अनुसार व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी जांच को लागू करना उचित समझते हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने भाड़े, ऋण लागत, व्यापार समायोजन के स्तर, छूट एवं पैकिंग के कारण समायोजनों की मांग की है। प्राधिकारी ने व्यापार के स्तर को छोड़कर इन सभी समायोजनों के साक्ष्य के आधार पर विचार किया है। जहां तक व्यापार के स्तर का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने सत्यापन के दौरान अंतिम

प्रयोक्ता तथा घरेलू बाजार में व्यापारी के बीच किसी विशेष आकार के लिए ग्रेडवार और मॉडलवार तुलना से संबंधित उचित सूचना उपलब्ध नहीं कराई है और यह कि औसत आधार पर की गई तुलना वास्तविक प्रतीत नहीं होती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जहां तक निर्यात बिक्रियों का संबंध है निर्यातक ने यह साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि भारत को गई बिक्रियां केवल व्यापारियों को ही की गई हैं। प्राधिकारी ने भाड़े, छूट, ऋण लागत एवं पैकिंग के लिए ही समायोजनों पर विचार किया है और पालिश की गई तथा पालिश न की गई श्रेणी के लिए आकारवार, ग्रेडवार तथा मॉडलवार टाइलों के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

भारित औसत सामान्य मूल्य *** डालर /वर्ग मीटर बनता है।

निर्यात कीमत

- (क) जहां तक निर्यात कीमत का संबंध है प्राधिकारी ने सी एण्ड एफ पर निर्यातक द्वारा किए गए दावे के अनुसार भाड़े एवं पैकिंग के लिए समायोजनों की अनुमति दी है और सत्यापन के दौरान यह भी नोट किया है कि निर्यात बिक्रियों पर ***दिनों के ऋण की अनुमति दी जाती है। सी आई एफ कीमत निकालने के लिए सी एण्ड एफ मूल्य पर 0.5% बीमा जोड़ा गया है ताकि कीमत कटौती का निर्धारण करने के लिए पहुँच मूल्य का आकलन किया जा सके।
- (ख) अतः प्राधिकारी ने आकारवार, ग्रेडवार तथा पालिश की गई और पालिश न की गई श्रेणी की अलग-अलग तुलना करके भारत को निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के पाटन मार्जिन का आकलन किया है। जहाँ कोई घरेलू बिक्री न होने के कारण किसी विशेष मॉडल की वास्तविक तुलना व्यवहार्य नहीं हुई है वहाँ विशेष ग्रेड और आकार के लिए उचित लाभ सहित भारित औसत उत्पादन लागत का संदर्भ दिया गया है।

भारित औसत कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत ***डालर /वर्गमीटर बनती है।

पाटन मार्जिन 13.27% बनता है।

15. यूएई के अन्य निर्यातक / उत्पादक (मै0 रैंक सिरेमिक्स को छोड़कर)

प्राधिकारी ने उचित समायोजनों के साथ याचिकाकर्त्ताओं के आंकड़ों के आधार पर प्रारंभिक जांच परिणामों में विचारित पद्धति के अनुसार असहयोगी निर्यातकों के लिए सम्बद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य पर विचार किया है और सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों से साक्ष्य के रूप में औसत निर्यात कीमत का संदर्भ लेकर ऐसे निर्यातकों के लिए कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत पर विचार किया है। पाटन मार्जिन 99% निर्धारित किया जाता है।

16. चीन जनवादी गणराज्य के सभी निर्यातक / उत्पादक

सामान्य मूल्य:

प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद भी चीन जनवादी गणराज्य के किसी निर्यातक / उत्पादक द्वारा निर्धारित प्रश्नावली में उत्तर दायर नहीं किया गया है और इस प्रकार चीन जनवादी गणराज्य के किसी उत्पादक / निर्यातक ने कोई सहयोग नहीं किया है। अतः प्राधिकारी 3.12.2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों में यथाउल्लिखित पद्धति की पुष्टि करते हैं और ऐसे उत्पादकों / निर्यातकों के लिए नियम 6.8 के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य को स्वीकार करते हैं जैसाकि प्रारंभिक जांच परिणामों में किया गया था।

निर्यात कीमत

निर्यात कीमत के बारे में प्राधिकारी अनुरोध को नोट करते हैं कि डी जी सी आई एंड एस के आंकड़े निर्यात कीमत का मूल्यांकन करने हेतु उपयुक्त नहीं है जैसाकि 3 दिसम्बर, 2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 12 में दिया गया है। सार्वजनिक सुनवाई में कुछेक हितबद्ध पक्षों तथा इसके बाद प्राधिकारी द्वारा किए गए अनुरोधों में बताया गया कि मोजाइक टाइलों की कीमत को याचिकाकर्त्ताओं द्वारा दी गई गौण स्रोतों की सूचना के अनुसार निर्यात कीमत में शामिल किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि यह विचाराधीन उत्पाद का हिस्सा नहीं है और कम कीमत होने के कारण पहुंच मूल्य कम रहा है जिसके फलस्वरूप क्षति मार्जिन में वृद्धि हुई है। अनुरोधों के मददे नजर, प्राधिकारी गौण स्रोतों से प्राप्त सूचना और विचाराधीन उत्पाद के लिए आवश्यक सौदों पर विचार करते हुए याचिकाकर्त्ता द्वारा दी गई सूचना की पुनः पुष्टि करते हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सार्वजनिक सुनवाई के बाद एक आयातक मै0 निटको टाईल्स ने जांच की अवधि के दौरान चीन जनवादी गणराज्य से सम्बद्ध वस्तुओं के अपने आयातों के संबंध में सूचना प्रदान की है। प्राधिकारी ने

याचिकाकर्त्ता द्वारा दी गई गौण सूचना से प्राप्त निर्यात कीमत के साथ इसे सह-सम्बद्ध किया है। प्राधिकारी ने मै0 निटको टाईल्स द्वारा दी गई सी आई एफ पर सूचना और आयातों के लिए याचिकाकर्त्ता द्वारा निटको द्वारा किए गए उन आयातों पर दी गई सूचना को छोड़कर संदर्भ लिया है जिन्होंने उनके द्वारा दिए गए वास्तविक आंकड़े दिए हैं और आयातक की सूचना के अनुसार समुद्री भाड़े तथा समुद्री बीमा पर किए गए समायोजनों तथा सी आई एफ पर पत्तन व्ययों, अंतर्राज्यीय भाड़ा तथा भाड़ा बीमा पर कमश: ***%, *** % और *** % तक के समायोजनों पर विचार किया।

कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत *** डालर /वर्गमीटर बैठती है।

उपरोक्त के अनुसार पाटन मार्जिन 290 % तक बैठता है।

ड क्षति

17. पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में निम्नानुसार व्यवस्था है:—

“क्षति का निर्धारण:

- (i) निर्दिष्ट देशों से हुए आयातों के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी आगे अपने निष्कर्ष दर्ज करेंगे कि भारत में होने वाले ऐसे आयातों से भारत में स्थापित किसी उद्योग को वास्तविक क्षति होती है अथवा क्षति का खतरा उत्पन्न होता है अथवा किसी उद्योग को स्थापित करने में बाधा आती है;
- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के खतरे और घरेलू उद्योग की स्थापना में आने वाली वास्तविक बाधा और /और पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर इसके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव समेत सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इन नियमों के अनुबंध II में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार पाटित आयातों और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का मूल्यांकन करेंगे। ”

18. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में उल्लिखित क्षति के निर्धारण के सिद्धांतों में यह निर्धारित है कि:—

i. क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव दोनों की वस्तुपरक जांच शामिल होगी।

ii. पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में काफी वृद्धि हुई है। नियम 19 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा काफी हद तक कीमतों में कमी लाना अथवा कीमत की उस वृद्धि को रोकना है जो कि अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

च. क्षति का संचयी मूल्यांकन:

19(क) उपर्युक्त नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध— ii (iii) में यह व्यवस्था है कि जिस मामले में किसी उत्पाद का आयात एक से अधिक देशों से हुआ हो और उनकी एक साथ जांच हो रही है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से मूल्यांकन केवल तब करेगा जब वह यह निर्धारित करता है कि प्रत्येक देश से किए गए आयातों के बारे में तय किया गया पाटन मार्जिन निर्यात मूल्य के रूप में दिए गए 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से किए गए आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का 3 प्रतिशत है अथवा जहां प्रत्येक देश का निर्यात 3% से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7 प्रतिशत से अधिक बनता है और आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभावों का संचयी रूप से मूल्यांकन करना उचित है।

(ख) प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन और संबद्ध देशों से किए गए आयातों की मात्रा उक्त निर्धारित सीमा से अधिक है। यू ए ई और चीन जनवादी गणराज्य से हुए आयातों के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन करना उचित है क्योंकि भारतीय बाजार की निर्यात कीमतों की प्रतिस्पर्धा सीधे घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत कीमतों से हो रही थी जो घरेलू उत्पादों का स्थान ले रहे थे।

20. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए हम उक्त नियमावली के अनुबंध—ii(iv) के अनुसरण में ऐसे संकेतकों पर विचार कर सकते हैं जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हों जैसे उत्पादन, क्षमता का उपयोग, बिक्री की मात्रा, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

21. घरेलू उद्योग के विचार

- (i) मै0 आरएके सिरामिक्स तथा कुछ आयातकों द्वारा इस बात का उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। मै0 एचआरजे की निदेशक की रिपोर्ट से कुछ उद्धरण, जहां अगले कुछ वर्षों में ***% तक मांग में वृद्धि बताई गई है, दिए गए हैं। यह अनुरोध किया गया है कि निदेशक की रिपोर्ट में किया गया उल्लेख सामान्यतया समस्त टाइल उद्योग का संकेतक है।
- (ii) यह बताया गया है कि मै0 एसएलपी संयंत्र नवंबर, 2000 में शुरू हुआ था और वर्ष के दौरान चार महीनों के लिए प्रयोग किया गया है। मै0 एसपीएल विट्रीफाइड टाइल्स संयंत्र ने वास्तव में मार्च, 2000 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया था न कि नवंबर, 2000 में।
- (iii) जहां तक क्षति का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी को केवल विचाराधीन उत्पादों से संबंधित कारकों को ध्यान में रखना चाहिए न कि कंपनी को समग्र/ पूर्ण रूप से। आयातकों/ निर्यातकों द्वारा अनुरोध किया गया है कि जनवरी, 2001 में गुजरात में विनाशकारी भूकंप ने मै0 एसपीएल के उत्पादन को प्रभावित किया है। यह अनुरोध किया गया है कि मै0 एसपीएल प्लांट हरियाणा में अवस्थित है।
- (iv) व्यापक तर्क दिए गए हैं कि क्षति संबंधी विश्लेषण मॉडल-दर-मॉडल अथवा ग्रेड-दर-ग्रेड आधार पर किया गया है। यह तर्क देते समय, विरोधी पक्षों ने पाटनरोधी नियमों के अनुबंध ii के पैरा 6 की बिल्कुल अनदेखी की है। इसे तत्काल संदर्भ के लिए नीचे पुनः उद्धृत किया गया है:—

“(vi) पाटित आयातों के प्रभाव का जायजा लिया जाएगा, जब उपलब्ध आंकड़े उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादकों की बिक्री तथा लाभ जैसे मानदंड के आधार पर उस उत्पादन की अलग शिनाख्त की अनुमति देते हैं। यदि उस उत्पादन की ऐसी अलग शिनाख्त संभव न हो, तो सबसे छोटे समूह के उत्पादन अथवा उत्पादों के वर्ग की जांच द्वारा पाटित आयातों के प्रभाव का जायजा लिया जाएगा, जिसमें समान उत्पाद शामिल हैं, जिसके लिए आवश्यक सूचना उपलब्ध कराई जा सकती है।”
- (v) इस विशेष प्रावधान को संक्षिप्त रूप से इस कारणवश जोड़ा गया है कि ऐसे मापदंड के आधार पर घरेलू उद्योग के अलग उत्पादन की अलग-अलग मॉडलों अथवा अलग-अलग ग्रेडों के रूप में पहचान करना असुविधाजनक है क्योंकि उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादकों की बिक्रियां और लाभ व्यावहारिक नहीं हैं। वस्तुतः इस प्रावधान से विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को विशेष परिस्थितियों में विचाराधीन उत्पाद की अपेक्षा अनेक उत्पादों को शामिल करने के लिए पर्याप्त शक्तियां

मिलती हैं इसलिए यह दावा करने का कोई आधार नहीं है कि विचाराधीन उत्पाद के सबसेट के लिए क्षति का विश्लेषण अवश्य किया जाना चाहिए।

- (vi) यह उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग ने सामान से लाभ अर्जित किए हैं और इसलिए क्षति का उनका दावा न्यायोचित नहीं है। इस संबंध में यह अनुरोध किया गया है कि क्षति विश्लेषण केवल विचाराधीन उत्पाद के लिए किया जाना अपेक्षित है न कि सम्पूर्ण कंपनी के लिए। इस संबंध में सीगेट केस लॉ सं० 2000(117) ई एल टी-625 (सीगेट), ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी संगत है।
- (vii) सम्बद्ध देशों के आयातकों का कुल आयातों में 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनता है और यह कि आयात नौ महीने की लघु अवधि में कुल मांग का 3.66 प्रतिशत हिस्सा हथियाने में सफल रहे हैं जोकि बहुत महत्वपूर्ण है। घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा अच्छे क्षमता उपयोग द्वारा अधिक रहा होता यदि पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उत्पादकों के लिए मांग में कमी न आई होती।
- (viii) एक आयातक ने तर्क दिया है कि कीमत कटौती की जांच उपयुक्त नहीं है और यह कि घरेलू उद्योग ने आयातों के पहुंच मूल्य का 2.34 गुना दाम लिया है और यह कि इससे उन्हें क्षति पहुंची है। यह तर्क दिया गया है कि कीमत कटौती वितरक के स्तर पर की जानी चाहिए क्योंकि पहुंच मूल्य और अन्तिम उपभोक्ताओं के लिए कीमत में व्यापक अन्तर है। आगे यह भी उल्लेख किया गया है कि कीमत कटौती के निर्धारण के लिए खुदरा कीमत पर विचार किया जाना चाहिए। यह उल्लेख किया गया है कि निटको टाइल्स भारत में इस उत्पाद की बिक्री ऐसे उत्पादों के पहुंच मूल्य की तुलना में एक पर्याप्त मार्जिन पर रहा है। यह अन्तर यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त है कि निटको टाइल्स के पास पाटित कीमतों के कारण पर्याप्त मार्जिन से अधिक मार्जिन उपलब्ध है। वे इस उत्पाद का आयात करते हैं और इसलिए अपनी इच्छा पर घरेलू उद्योग में कीमत कम करने की स्थिति में है। ऐसा निटको टाइल्स लि० और रॉक सिरामिक्स के साथ कड़ी तुलना के कारण है कि यद्यपि पाटित आयातों की कीमत बहुत कम है किन्तु उसकी घरेलू पुनः बिक्री कीमत काफी अधिक है। घरेलू उद्योग ने कीमत कटौती और बिक्री से कम कीमत के बारे में विचाराधीन उत्पाद से संबंधित वास्तविक आंकड़े प्रस्तुत किए हैं जो प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों का आधार रहे हैं।
- (ix) कज़ारिया सिरामिक्स के परामर्शदाता ने यह भी तर्क दिया है कि प्रतिस्पर्धा लघु क्षेत्र से रही है और यह कि पाटन से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुंची होगी। आयातक का तर्क भ्रामक है क्योंकि लघु क्षेत्र किसी भी प्रकार विट्रीफाइड टाइलों का निर्माण नहीं करता है।

22. बिल्डर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के विचार:

- (i) विट्रीफाइड टाइलों के विभिन्न ग्रेडों और प्रकारों की कीमतें न केवल अन्तर्राष्ट्रीय रूप से बल्कि स्थानीय बाजार में भी काफी पर्याप्त रूप से भिन्न होती हैं और इसलिए एक सामान्य बैचमार्क संदर्भ कीमत निर्धारित नहीं की जा सकती। पाटित क्षति और कारणात्मक संबंध का कोई विश्लेषण करने से पूर्व देश में विनिर्मित और देश में आयातित विट्रीफाइड टाइलों की विभिन्न किस्मों / प्रकारों की पहचान की जानी चाहिए।
- (ii) घरेलू उत्पादकों ने स्वयं ही स्वीकार किया है कि उनकी बिक्री मात्रा और वसूली बढी है और इसलिए वे आयातों के कारण क्षति का दावा नहीं कर सकते हैं।

23. मै0 त्रिशला डिस्ट्रीब्यूटर्स के विचार:

- (i) विभिन्न ग्रेडों का उत्पादन एक उत्पादक की कुशलता पर निर्भर करता है और इस पर भी कि उन्होंने अलग-अलग उत्पादन नहीं किया है। प्रीमियम क्वालिटी टाइलों के अधिक उत्पादन से अधिक बिक्री वसूली होती है। टाइलों का श्रेणीकरण पैकिंग से बिल्कुल पहले किया जाता है। याचिकाकर्ताओं ने अपने विभिन्न प्रकारों के उत्पादन और इस बात का कि क्या वे अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार उत्पादन कर सकते हैं, को प्रकट नहीं किया है। याचिकाकर्ता कंपनियों को क्षति उच्च गुणवत्ता के उत्पाद का उत्पादन करने में उनकी अक्षमता के कारण है और इस प्रकार यह नोट करना महत्वपूर्ण होगा कि ग्रेड / क्वालिटी का ध्यान किए बिना इस पर उत्पन्न व्यय वही रहता है।
- (ii) टाइलों का आकार, रंग, ग्रेड और डिजाइन लागत और कीमत को प्रभावित करता है। टाइलों के उत्पादन के परिणामस्वरूप टूट-फूट के कारण अपव्यय होता है। भारतीय उत्पादकों का अपव्यय स्तर बहुत-बहुत अधिक है। भारतीय उत्पादकों की इस अक्षमता के लिए उपभोक्ता को दंड नहीं दिया जा सकता।
- (iii) याचिकाकर्ता को क्षति अधिक कार्य प्रगति पर होने अथवा सामान-सूची के कारण हो सकती है। याचिकाकर्ता की परियोजना रिपोर्ट मंगाई जानी चाहिए टाइप-वार उत्पादन के लिए परियोजना रिपोर्ट में अपनाए गए मानकों पर विचार किया जाना चाहिए।
- (iv) याचिकाकर्ता कंपनियां बहु-उत्पाद कंपनियां हैं, जो विभिन्न प्रकार की टाइलों का उत्पादन कर रही हैं और उनके पास शेयरिंग सुविधाएं हैं। यह संभव है कि

अन्य प्रकार की टाइलों पर उत्पन्न लागतों को उपशीर्ष और उपयोगिताओं जैसी मदों के संबंध में विट्रीफाइड टाइलों के साथ आबंटित किया जा रहा हो।

- (v) याचिकाकर्ता कंपनियां सिरामिक्स टाइलों में हानि के बारे में कह रही थीं। अब वे विट्रीफाइड टाइलों में हानि के बारे में बता रही हैं लेकिन ये कंपनियां निरन्तर अच्छे लाभ दर्शा रही हैं और सिरामिक्स उद्योग की लाभकारिता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः हमें आश्चर्य होता है कि उद्योग कहां से लाभ कमा रहा है।
- (v) यह उत्पाद एक उपभोक्ता उत्पाद है और मुख्य रूप से खुदरा स्तर पर बेचा जाता है। सामग्री का जिस कीमत पर आयात किया जाता है और अंत में उपभोक्ताओं को फिर से बेचा जाता है वह बहुत ही भिन्न है। आयात के बाद आयातकों द्वारा कई प्रकार के व्यय किए जाते हैं। खुदरा स्तर पर कीमत में कोई कटौती नहीं होगी।
- (vi) विट्रीफाइड टाइलों की बिना प्रतिबंध के आयातों की अनुमति केवल 1.4.2000 से थी और जांच की अवधि भी 1.4.2000 से शुरू होती है। यह आयातों में तत्काल वृद्धि का मामला नहीं है अतः पिछली अवधि के साथ आयातों की तुलना का प्रश्न, जबकि किसी भी आयात की अनुमति नहीं दी गई थी, संभव नहीं है।
- (vii) घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि मांग में वृद्धि हुई है इसलिए उत्पादन, क्षमता में भी वृद्धि हुई है। आयातों में सम्पूर्ण अर्थों अथवा सापेक्ष अर्थों में वृद्धि से संबंधित किसी भी ब्यौरे के अभाव में पाटनरोधी शुल्क लगाने का प्रश्न सही नहीं है।
- (viii) घरेलू उद्योग यह दिखाने के लिए कोई ठोस साक्ष्य प्रस्तुत करने में असफल रहा है कि आयातों के कारण उन्हें क्षति हुई है। लाभ का मार्जिन केवल एक कारक है और क्षति का निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त नहीं है।
- (ix) क्षति की जांच करने से पहले अकुशलता, उचित वसूली, बिकियां और लाभ संबंधी मुद्दों पर विचार किया जाना आवश्यक है।
- (x) घरेलू उद्योग प्रीमियम और गौण श्रेणी की टाइलों का निर्माण करता है इसलिए काफी कीमत भिन्नता है। अतः उनके द्वारा बाजार वसूली से संबंधित घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़े सैद्धान्तिक रूप से गलत और त्रुटिपूर्ण हैं।

(xi) निर्दिष्ट प्राधिकारी देख सकते हैं कि आयातों से पूर्व और आयातों के बाद घरेलू उद्योग की कीमत वसूली वही रही है। जीएफ 109 और जीएफ 200 की कीमतें भी यही दर्शाती हैं।

(xii) घरेलू उद्योग की अधिकतम खुदरा कीमत की तुलना आयातों की पहुंच लागत के साथ नहीं की जा सकती है। क्षति की सीमा का निर्धारण करने की किसी कार्यवाही से पहले समुचित समायोजन किया जाना है।

24. मै0 केन्ट सिरामिक टाइल्स कं0 प्रा0 लि0 और मै0 कजारिया सिरामिक्स के विचार

- (i) कम बिक्री कीमत के मुद्दे पर प्राधिकारी को हितबद्ध पक्षकारों के क्षतिरहित कीमत के संघटक और तत्वों का खुलासा करना चाहिए। ईयू-अर्जेन्टीना सिरामिक टाइल्स मामले में पैनल रिपोर्ट के अनुसार भी नियमावली के अनुबंध II के अनुसार क्षति के लिए 15 संकेतकों में से प्रत्येक की स्पष्ट रूप से जांच करना निर्दिष्ट प्राधिकारी का दायित्व है। मै0 एच आर जे के निदेशकों की रिपोर्ट भी यह प्रदर्शित करती है कि आयातों से और लघु उद्योग क्षेत्र से भी प्रतिस्पर्धा करने की संभावना है। इस प्रकार, याचिकाकर्ता आयातों के साथ-साथ अन्य स्रोतों से प्रतिस्पर्धा के अध्यधीन हैं।
- (ii) घरेलू विनिर्माता बाजार के 96.34% पर नियंत्रण रखते हैं और घरेलू विनिर्माताओं द्वारा निर्मित विभिन्न उत्पादों का प्रभाव आयातों के प्रभाव से काफी अधिक है।
- (iii) प्राधिकारी ने पाटन से अन्य कारकों, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो, पर विचार नहीं किया है। इस उत्पाद का लगभग सभी घरेलू वाणिज्यिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों, अस्पतालों, कालेजों इत्यादि में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है और इस विषय में 400 अनुरोध दायर किए गए हैं जो उपयोगकर्ता के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उपयोगकर्ताओं के हित पर विचार करने के लिए कुछ मानदण्ड अपनाने चाहिए।

25. मै0 निटको टाइल्स के विचार:

- (i) अनुबंध-II के अन्तर्गत क्षति के विषयपरक मूल्यांकन के लिए पाटित आयातों की मात्रा, पाटित आयातों के प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के प्रभाव की जांच करना अपेक्षित होता है। अनुबंध-II के पैरा (iv) में दिए गए 15 मापदण्डों का मूल्यांकन करना भी अपेक्षित होता है।

प्राधिकारी ने 15 में से केवल 6 संकेतकों का मूल्यांकन किया है। पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.4 के अनुसार और भारत से ब्रेड लिनेन, मैक्सिको-एच एफ सी एस के बारे में पैनल के मामले में सभी 15 मापदण्डों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इस प्रकार घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति की जांच करना एक उद्देश्य नहीं है।

- (ii) कीमत में कटौती और कम कीमत पर बिक्री अनुबंध II के पैरा (iv) में दिए गए क्षति संबंधी मापदण्ड नहीं है।
- (iii) वास्तव में यह सही नहीं है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण बाजार हिस्से को गंवाना पड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राधिकारी का यह विचार है कि घरेलू उद्योग को 3.66% तक बाजार हिस्सा गंवाया है।
- (iv) वर्ष 1999-2000 तक विट्रिफाइड टाइलों का आयात प्रतिबंधित था, 3.66% बाजार हिस्से की किसी सीमा को घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति के लिए संगत नहीं माना जा सकता है। वास्तव में जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता कंपनी बाजार हिस्सा 51% से बढ़कर 65.8% हो गया। वर्ष 1999-2000 की तुलना में वर्ष 2000-2001 में कुल मांग की तुलना में वर्ष 2000-2001 में कुल मांग 37.5% तक बढ़ गई और याचिकाकर्ता कंपनी की बिक्रियों में 76.1% तक बढ़ोत्तरी हुई थी। प्रारंभिक जांच परिणामों में विश्लेषित लाभप्रदता / आरओआई का इस बात के लिए विचार नहीं किया गया है कि वर्ष 1999-2000 से जांच की अवधि, विशेषरूप से जबकि एस पी एल भी बाजार में आ गयी थी, के बाद लाभप्रदता में कैसे परिवर्तन आया।
- (v) यह विश्लेषण कि चीन और यूएई से आयातित उत्पादों का पहुंच मूल्य क्षतिकारक उत्पादों की औसत बिक्री कीमत से काफी कम है और इसमें कीमतों में कटौती हुई है, वास्तव में प्रकट करने में अधिक छिपाया गया है। यह तथ्य कि घरेलू उद्योग ने आयातों के पहुंच मूल्य का 2.34 गुना प्रभार लगाया है प्रदर्शित करता है कि आयातों के पहुंच मूल्य घरेलू कीमतीकरण पर कोई प्रभावकारी नहीं है। ऐसा बिन्दु, जिस पर कीमत कटौती का मूल्यांकन किया जाना हो, पहुंच मूल्य की तुलना में औसत बिक्री कीमत नहीं है परन्तु वितरकों को दुबारा बेची गई आयातित वस्तुओं की कुछ कीमत की तुलना में स्वदेशी उद्योग की औसत बिक्री कीमत होती है।

- (vi) चीन से आयात करने के बाद मै. निटको की पुनः बिक्री कीमतें पहुंच मूल्य से काफी अधिक है।

- (vii) अनुक्रमणिका आंकड़ों के आधार पर गणना के अनुसार कीमत कटौती विश्लेषण यह प्रदर्शित करते हैं कि घरेलू उद्योग वास्तविक रूप से अपनी एन आई पी कीमतों से उच्च कीमत प्राप्त कर सका जो वास्तविक क्षति का न होना दर्शाता है।
- (viii) मै0 एच आर जे द्वारा दायर परियोजना रिपोर्ट के अनुसार जांच की अवधि के दौरान प्राप्तियां बढ़ी हैं उसके बाद कोई कीमतहास और कीमत में कमी प्रदर्शित नहीं हुई है।
- (ix) कारणात्मक संबंध विश्लेषण का स्तर जो इस निष्कर्ष द्वारा निर्धारित किया जाना है कि पाटित आयात क्षति का पूर्व प्रभावीकरण होना चाहिए, प्रदर्शित होना चाहिए।
- (x) प्राधिकारी ने अनुबंध II के पैरा (v) के अनुसार पाटन के अलावा अन्य कारकों पर विचार नहीं किया है। जांच अवधि में मै0 एसपीएल की मौजूदगी का तथ्य तथा घरेलू उद्योग में आपूर्ति मांग तथा कीमत के प्रभाव का मूल्यांकन नहीं किया गया है।
- (xi) अन्य देशों से सी आई एफ कीमतें भी 13.62 अमरीकी डालर प्रति वर्ग मी0 के क्षति रहित कीमत से कम है जिसके मूल्यांकन करने की आवश्यकता है और अन्य स्रोतों से हुए आयातों के प्रभाव का भी मूल्यांकन होना चाहिए।
- (xii) घरेलू उद्योग के मारबोनाइट उत्पाद के चार ग्रेड हैं और प्रिमियम ग्रेड और अन्य ग्रेडों के बीच कीमत का अन्तर काफी महत्वपूर्ण है। जांच को पूर्ण रूप से तोड़ा मरोड़ा गया है क्योंकि तुलना तथा कीमत कटौती और कम कीमत पर बिकी घरेलू उद्योग की एकल बिकी कीमत और एकल क्षतिरहित कीमत के आधार पर है।
- (xiii) घरेलू उद्योग को हुई क्षति अक्षमताओं के कारण स्वप्रदत्त है और प्राधिकारी कथित क्षति के स्वप्रदत्त होने का मूल्यांकन करने के लिए पिछले तीन वर्षों के लिए प्रीमियम तथा अन्य किस्मों के उत्पादन के अनुपात को मंगा सकते हैं और उनकी जांच कर सकते हैं। (iv) पैरा 12 से पैरा 17 में वास्तविक क्षति तथा कारणात्मक संबंध से संबंधित अनुरोधों से यह देखा गया है कि कोई भी अनुरोध वास्तविक क्षति और कारणात्मक संबंध की अनुपस्थिति के बारे में हमारे द्वारा उठाए गए विशिष्ट बिन्दुओं के साथ मेल नहीं खाते हैं। अनुरोधों में ऐसे पैरा शामिल हैं जो बिल्कुल साधारण हैं और सार्वजनिक सुनवाई के दौरान हमारे द्वारा उठाए गए विशिष्ट मुद्दों से संबंधित नहीं हैं।

26. मै0 रॉक सेरामिक्स, यू ए ई के विचार:

- (i) पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के अनुसार अपेक्षित क्षति निर्धारण में वास्तविकता का अभाव है। निर्दिष्ट प्राधिकारी की जांच से यह देखा गया है कि कीमतों में कोई कीमत ह्रास नहीं हुआ है वस्तुतः कीमतें बढ़ी हैं। मॉडलवार आधार पर सक्षय प्रदान करने के दायित्व को पूरा नहीं किया गया है और कारणात्मक संबंध भी नहीं बताया गया है। घरेलू उद्योग के लिए दो वर्षों में बिकी मात्रा तथा बिकी मूल्य में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग के लिए मात्रा के अनुसार बाजार हिस्से में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है और नकद प्रवाह तथा रोजगार महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा है। घरेलू उद्योग अच्छी लाभप्रदता की स्थिति में है जो कि मुरदेश्वर सेरामिक्स लि० के मामले से स्पष्ट है। इस बात का कोई कारण नहीं है कि एच आर जॉनसन तथा एस पी एल जैसे बड़े प्रतियोगियों को कोई घाटा उठाना पड़े। इस प्रकार कथित पाटित आयातों तथा कथित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं होता है।
- (ii) रॉक उत्पादों की घरेलू उद्योग के तुलनीय उत्पाद की कीमतों से अधिक कीमतों पर बिकी की जा रही है, जो कि रॉक द्वारा किए गए तथा प्रदान किए गए विश्लेषण से प्रमाणित होता है।
- (iii) प्रतिस्पर्धा पुनःबिकी और उपभोक्ता उत्पाद के पुनः बिकी कीमत के स्तर पर उत्पन्न होती है जिसका घरेलू कीमतों पर घनात्मक अथवा ऋणात्मक प्रभाव पड़ सकता है। वैचारिक तथा सैद्धान्तिक दृष्टि से यह पुनःबिकी कीमत पहुंच मूल्य के समान है जिसको कीमत कटौती और कम बिकी कीमत मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उपयोग किया जाना है। प्राधिकारी को अन्य ज्ञात कारकों की जांच भी करनी चाहिए जिनका अन्य देशों से आयात, उत्पादन, अक्षमताएं और टूट फूट सहित लागत और अन्य लागत में वृद्धि जैसे घरेलू उद्योग पर प्रभाव पड़ सकता है।

27. अल-खरीज सिरेमिक्स, यूएई के विचार

- (i) प्रारंभिक जांच परिणामों में हितबद्ध पार्टियों खासकर आयातकों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों पर विचार नहीं किया गया है। प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 19 में प्राधिकारी ने उत्पादन की इष्टतम लागत पर विचार करते हुए क्षतिरहित बिक्री कीमत पर विचार किया है किन्तु उक्त जांच परिणामों में इष्टतम लागत तथा क्षमता उपयोग के कारकों को किसी भी प्रकार स्पष्ट नहीं किया गया है।

(ii) प्राधिकारी ने जांच परिणामों में यह माना है कि बिक्री मात्रा तथा मूल्य में वृद्धि हुई है और यह भी माना है कि चीन और यूएई से आयातों के कारण कीमतें कम हुई हैं । यूनिट कीमतें प्राप्ति में भी वृद्धि हुई है जैसाकि प्रारंभिक जांच परिणामों में उल्लेख किया गया है किन्तु इसके साथ-साथ यह भी बताया गया है कि कीमतों में कमी हुई है । यह असंगत और विरोधभासी है ।

(iii) जहां तक क्षति का संबंध है, स्पष्ट विसंगतियां अर्थात् यूनिट कीमत प्राप्त में वृद्धि के रूप में है जिनकी घरेलू उद्योग द्वारा निवेश पर आय के संदर्भ में जांच करने की जरूरत है । घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है तथा लाभप्रदता के मुद्दे पर प्राधिकारी ने इस आधार पर कार्रवाई की है कि समग्र घरेलू उद्योग को ऋणात्मक आय प्राप्त हुई है । ऐसी स्थिति में जहां घरेलू उद्योग क्षतिरहित कीमत से अधिक मूल्य अर्थात् 13.62 अमरीकी डालर प्रति वर्गमीटर पर बिक्री कर रहा है तो क्षति और कारणात्मक संबंध का प्रश्न नहीं उठता ।

(iv) कारणात्मक संबंध के मुद्दे की जांच नियमावली के अनुबंध II के पैरा 5 के अनुसार की जाती है जो कि डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 3.5 के प्रतिरूप है । वर्तमान मामले में इस प्रकार कस विश्लेषण नहीं किया गया है ।

28. प्राधिकारी द्वारा जांच

क. प्राधिकारी अनुबंध 3.4 के अनुसार क्षति के मूल्यांकन के बारे में तथा क्षति के 15 मापदंडों के मूल्यांकन के बारे में विभिन्न संबद्ध पार्टियों द्वारा किये गए अनुरोधों को नोट करते हैं । जैसा कि डब्ल्यू टी ओ के विभिन्न पैनल निर्णयों में भी माना गया है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि विभिन्न हितबद्ध पार्टियों ने उल्लेख किया है कि जहां अनुच्छेद 2.4 पाटन मार्जिन के मूल्यांकन से स्वतः संबंधित है वहीं इसका अर्थ यह भी निकलता है कि कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री की गणना भी विचाराधीन उत्पाद का उचित श्रेणीकरण करने के बाद की जानी चाहिए । प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि एक उत्पादक मै0 मरुदेसर सिरैमिक्स लि0 भारी मुनाफा कमा रहा है और ऐसा कोई कारण नहीं है जिसकी वजह से दो अन्य घरेलू उत्पादक मुनाफा न कमा रहे हों । वार्षिक रिपोर्टों से विभिन्न उद्धरणों का उल्लेख किया गया है जिनमें यह इंगित किया गया है कि सिरैमिक्स उद्योग लाभ की स्थिति में है और घरेलू उत्पादकों को कोई क्षति नहीं हुई है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि दिनांक 1.4.2000 से विट्रीफायड

टाइलों के आयात शुरू होने के बारे में अनुरोध किये गये हैं जिससे यह पता चलता है कि आयातों में वृद्धि के बारे में कोई तुलना करने के लिए इस प्रकार का कोई पिछला रिकार्ड नहीं रहा है और इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है ।

(ख) जहां तक घरेलू उद्योग की उत्पादन प्रणाली में कमियों का संबंध है प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत के मूल्यांकन हेतु क्षमता कच्ची सामग्री के उपयोग तथा उपयोगिता संबंधी सर्वोत्तम पद्धति की बेचमार्किंग करके उत्पादन लागत को मानकीकृत करने की पद्धति पर विचार किया है ।

(ग) प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि अन्य देशों से हुए आयात, उत्पादन प्रणाली में कमी तथा आयातित टाइलों की मांग में कम बाजार हिस्से जैसे अन्य कारकों के मूल्यांकन के बारे में अनुरोध किये गये हैं जिन पर कारणात्मक संबंध का आकलन करते समय विचार किया जाना है । प्राधिकारी ने डब्ल्यू टी ओ के अनुच्छेद 3.5 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुच्छेद II के पैरा V के अनुसार इन कारकों पर विचार किया है ।

(घ) घरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण रिकार्ड में उपलब्ध सूचना तथा पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा किए गए सत्यापन के आधार पर किया गया है । घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ निम्नलिखित मापदंडों का विश्लेषण किया गया है :

(i) बिक्री मात्रा:

घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि भारत में विट्रोफायड टाइल्स उद्योग अधिक पुराना नहीं है। यह बात स्पष्ट है कि पिछले वित्त वर्ष में जब उद्योग बेहतर स्थिति में आने की आशा कर रहा था तब सम्बद्ध देशों से हुए पाटन के परिणामस्वरूप पिछले दो वर्षों की तुलना में बिक्री मात्रा में हुए कुछ सुधार के बावजूद घाटे में बढ़ोतरी हुई है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि जहां पिछले दो वर्षों की तुलना में बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है वहीं यह वृद्धि उस अत्यधिक क्षमताओं के कारण हुई है जिन्हें इस अवधि के दौरान सृजित किया गया था ।

(ii) चीन तथा यूएई के आयातों का बाजार हिस्सा:

सम्बद्ध वस्तु के आयात संबंधी आंकड़ों की जांच से यह पता चलेगा कि सम्बद्ध देशों अर्थात् चीन और यूएई से हुए आयात (कुल आयातों के प्रतिशत के रूप में) 1998-99 तथा 1999-2000 में शून्य से बढ़कर जांच अवधि के दौरान लगभग 71% हो गये हैं ।

वर्ष	संबद्ध देशों से आयात(वर्ग मीटर)	कुल आयात(वर्ग मीटर)	% हिस्सा
1998-99	0.00	121.00	0.00%
1999-2000	0.00	8.22	0.00%
अप्रैल 2000-मार्च 2001	119570.00	169246.70	70.65%

प्राधिकारी ने इस बात को जानते हुए कि सम्बद्ध देशों से आयात 1998-99 तथा 1999-2000 के वर्षों में प्रतिबंधित थे, जांच अवधि के भीतर पारस्परिक रुझान करने का निर्णय लिया । आयात संबंधी आंकड़ों की जांच से यह पता चलता है कि जांच अवधि की दूसरी छमाही में पहली छमाही की तुलना में सम्बद्ध देशों से आयातों में भारी वृद्धि हुई है । वर्ष 2000-2001 अर्थात् जांच अवधि के दौरान सम्बद्ध देशों से हुए कुल आयातों में से केवल 6.42 % आयात प्रथम छमाही के दौरान हुए जबकि दूसरी छमाही में 93.58 % आयात हुए थे । इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि जांच अवधि के भीतर सम्बद्ध देशों से हुए आयातों की प्रथम छमाही की तुलना में दूसरी छमाही आयातों में 15 गुणा से ज्यादा की वृद्धि हुई है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुल आयातों से आयातों की शुरुआत के पहले ही वर्ष के दौरान इसी प्रकार के रुझान का पता चलता है किन्तु परिवर्तन उतना अधिक नहीं हुआ है जितना कि सम्बद्ध देशों के मामले में हुआ है । जांच अवधि के भीतर आयातों के वृद्धि दर घरेलू उद्योग की क्षति का पर्याप्त संकेतक है । सम्बद्ध देशों से आसामान्य कीमत के संदर्भ में इस तथ्य की भी समीक्षा की जानी है ।

(iii) सम्बद्ध देशों से आयातों का बाजार हिस्सा (कुल मांग का %)

प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के याचिकाकर्ताओं और अन्य उत्पादकों सहित समूचे घरेलू उद्योग की बिक्री में कुल आयातों को जोड़कर देश में कुल मांग का आकलन किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि सम्बद्ध देशों से हुए आयात एक वर्ष की अति अल्प अवधि में कुल मांग का

3.66% बाजार हिस्सा हासिल कर सकते हैं। इस बात पर विचार करते हुए कि विट्रीफायड टाइल उपभोक्ता वस्तु के स्वरूप की होती है, 3.66% का बाजार हिस्सा स्पष्टतः एक बड़ा अनुपात है। यदि जांच अवधि की केवल दूसरी छमाही पर विचार किया जाए तो पाटित आयातों का बाजार हिस्सा काफी अधिक बनता है। इसके अलावा, सम्बद्ध देशों से आयातों का हिस्सा और भी ज्यादा हो सकता है क्योंकि वर्तमान अनुमान केवल चुनिंदा पत्तनों से है। इसके अलावा, यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि सम्बद्ध देशों से हुए आयात कुल आयातों के 70 % से अधिक है जबकि डब्ल्यू टी ओ करार तथा भारतीय कानून के तहत 3 % से अधिक के किसी आयात को अत्यधिक माना जाता है।

वर्ष	संबद्ध देशों से आयात(वर्ग मीटर)	कुल आयात(वर्ग मीटर)	% हिस्सा
1998-99	0.00	1884870	0.00%
1999-2000	0.00	2372081	0.00%
अप्रैल 2000-मार्च 2001	119570	3262558	3.66%

(iv) उत्पादन, उत्पादन की मात्रा तथा कम क्षमता उपयोग

घरेलू उद्योग द्वारा यह बताया गया है कि देश में सम्बद्ध वस्तु की मांग में उल्लेखनीय दर से वृद्धि हुई है और यह कि पारम्परिक फर्शाच्छादन एवं दिवारों के आच्छादन हेतु इसके प्रयोग में लगातार वृद्धि हुई है। आगे यह दावा किया गया है कि उभरते हुए बाजार की मौजूदगी के बावजूद सम्बद्ध देशों द्वारा अंधाधुंध पाटन के कारण उनके घाटे में वृद्धि हुई है। प्राधिकारी की राय यह है कि इन वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा वर्गमीटर के संबंध में क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि क्षति के एक कारक रूप में क्षमता उपयोग विट्रीफाइड टाइलों जैसे किसी उत्पाद में अत्यधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि वह किसी खास अवधि के दौरान उत्पादन की जा रही अलग-अलग आकारों की टाइलों के उत्पाद मिश्रण के आधार पर काफी अलग-अलग होगा। इस प्रकार, टाइलों जैसे उत्पाद के लिए उद्योग की स्थिति की वैध संकेतक के रूप में क्षमता उपयोग पर विचार नहीं किया जा रहा है जिसमें विभिन्न कारकों के अनुसार स्थापित क्षमता भी अलग-अलग होती है।

(v) बिक्री कीमत / लामप्रदता

घरेलू उद्योग ने बताया है कि उन्होंने भारी निवेश किया है और वे पिछले 2-3 वर्षों में स्वयं को स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। आगे यह तर्क दिया गया है कि इतनी अधिक सीमा तक पाटन के प्रभाव से घरेलू उद्योग को अत्यधिक क्षति हुई है और घरेलू उद्योग के घाटे में उस समय वृद्धि हुई है जब वह घाटे की स्थिति से उभरने की आशा कर रहा था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को कुल मिलाकर उनके निवेशों पर ऋणात्मक आय प्राप्त हुई थी।

(vi) कीमत कटौती

घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि चीन और यूएई द्वारा किये गये पाटन का सम्बद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति पर भारी प्रभाव पड़ा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि अपना बाजार हिस्सा बनाये रखने के लिए याचिकाकर्ताओं को चीन और यूएई से सम्बद्ध वस्तु की कम कीमत तथा उसके पाटित आयातों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी थी। पाटित आयातों के पहुंच मूल्य से यह भी पता चलता है कि चीन के मामले में % से अधिक तथा यूएई से हुए आयातों के मामले में % से अधिक की बिक्री कीमत में कटौती हुई है।

आयातकों में से एक आयातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि कीमत कटौती की जांच उचित नहीं है। यह बताया गया है कि यह तथ्य कि घरेलू उद्योग ने आयातों के पहुंच मूल्य के 2.34 गुणे की वसूली की है, यह प्रदर्शित करता है कि आयातों के पहुंच मूल्य का स्वदेशी कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। आगे यह दावा किया गया है कि कीमत में कोई कटौती नहीं हुई है क्योंकि आयातक / वितरक क्षति उच्च कीमत पर भारत में उक्त वस्तु की खुदरा बिक्री कर रहे हैं और यह कि कीमत कटौती की मात्रा निर्धारित करने के लिए खुदरा कीमत पर विचार किया जाना चाहिए। इस संबंध में यह नोट किया जाना चाहिए कि आयातक का यह तर्क कि कीमत कटौती की तुलना वितरक के स्तर पर की जानी चाहिए, कानून सम्मत अथवा तर्क संगत नहीं है। कीमत कटौती को आयातों के पहुंच मूल्य के परिप्रेक्ष्य में और न कि उस कीमत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है जिस कीमत पर वस्तु की बिक्री अंतिम प्रयोक्ताओं को की जाती है। तथापि, प्राधिकारी ने निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई सतत् पद्धति के अनुसार पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की कारखाना कीमत के साथ की है।

(vii) कम कीमत पर बिक्री

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के इस दावे की भी जांच की है कि घरेलू उद्योग को सम्बद्ध देशों द्वारा कम कीमत पर बिक्री के कारण उनके निवेशों पर घाटे अथवा असामान्य रूप से कम आय की वजह से नुकसान हो रहा है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षति-रहित कीमत की गणना की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा का पता लगाने के लिए उसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है। उक्त विश्लेषण से घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला कम कीमत पर बिक्री की पर्याप्त मात्रा का पता चलता है। उपलब्ध साक्ष्य की जांच से यह भी पता चलता है कि घरेलू उद्योग को कुल मिलाकर विट्रीफाइड टाइल की बिक्रियों पर घाटा हुआ है।

(viii) गंवाई गई संविदाओं का साक्ष्य

शिकायतकर्ता घरेलू उद्योग ने अपने ग्राहकों को बनाये रखने तथा अपने बाजार विस्तार करने की भरपूर कोशिश की। तथापि यह तथ्य कि जांच अवधि के दौरान भारत में 119570 वर्ग मी० के पाटित आयात हुए, इस बात का पर्याप्त साक्ष्य है कि उसने संभावित ग्राहकों को गंवा दिया है।

(ix) रोजगार एवं मजदूरी

जन शक्ति 1999-2000 में 537 से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 606 हो गई हैं। तथापि, इस वृद्धि को उस अतिरिक्त क्षमता के परिप्रेक्ष्य में देखना होगा जो इस अवधि के दौरान सृजित की गई थी। मजदूरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था क्योंकि ऐसा करना कंपनी के वित्तीय निष्पादन के अनुरूप मजदूरी में अंतर आने की मौजूदा स्थिति में व्यवहार्य नहीं है।

(x) मंडार सूचियां

मंडार के विश्लेषण से यह पता चलता है कि 2000-2001 के अंत में मंडार में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में लगभग 14 % की वृद्धि हुई है।

(xi) उत्पादकता एवं वृद्धि

संबद्ध वस्तु की मांग में अच्छी वृद्धि प्रदर्शित हो रही है और मांग में कमी घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है। तथापि, याचिकाकर्ता ने बाजार हिस्सा गंवाया है। यह नोट किया जा सकता है कि संबद्ध देशों से हुए आयातों ने अपेक्षाकृत अल्प अवधि में ही कुल मांग का 3.66% हिस्सा हासिल कर लिया है। घरेलू उद्योग द्वारा श्रम उत्पादकता पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं दर्शाया गया है परन्तु पूंजी की उत्पादकता पर दबाव बना हुआ है जैसाकि घरेलू उद्योग द्वारा उठाये गये नुकसान से प्रदर्शित होता है।

(xii) निवेशों पर आय (लगाई गई पूंजी)

संबद्ध देशों से कम कीमतों पर अत्यधिक बिक्री के कारण, याचिकाकर्ता कंपनियाँ घाटे में चल रही थीं। इसलिए निवेशों पर आय ऋणात्मक थी।

(xiii) नकद प्रवाह एवं पूंजी तथा निवेश बढ़ाने की क्षमता

सभी याचिकाकर्ता कंपनियाँ बहु-उत्पाद कंपनियाँ हैं और इनकी पूंजी बढ़ाने की क्षमता पर निर्णय लेना व्यवहार्य नहीं होगा क्योंकि यह एक कंपनी विशिष्ट कार्य है और किसी विशेष उत्पाद के निष्पादन से संबंधित नहीं है। स्पष्टतया विट्रिफाइड टाइल्स व्यवसाय से होने वाला नकद प्रवाह दबाव में हैं क्योंकि इस व्यवसाय में प्रत्यक्ष घाटे हुए हैं। घरेलू उद्योग ने यह भी दावा किया है कि वित्तीय घाटों की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, उनके लिए इस व्यवसाय में आगे कोई निवेश करना व्यवहार्य नहीं होगा।

29. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करना आवश्यक है कि भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के द्वारा कीमतों में महत्वपूर्ण रूप से कटौती तो नहीं हुई है, अथवा ऐसे आयातों के प्रभाव से अन्यथा कीमतों में काफी मात्रा में कमी तो नहीं आई है। भारत में घरेलू उद्योग पर प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले कारकों जैसे कि उत्पादन, बिक्रियाँ स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति इत्यादि पर विचार किया है। साक्ष्यों की जांच करने पर यह पाया गया है कि कीमतों में तेजी से कटौती की गई है। घरेलू उद्योग को उसकी वर्तमान क्षमता का उपयोग करने में बाधा हुई है और क्षमता उपयोग बहुत कम है। तथापि, प्राधिकारी के पास उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार क्षति दर्शाने वाला सबसे महत्वपूर्ण मापदण्ड कीमत कटौती है। संबद्ध देशों से जांच की अवधि के दौरान आयातों

की वृद्धि दर और घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति और घरेलू उद्योग के लाभ में तदनुरूपी गिरावट ऐसे मापदण्ड हैं जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं। प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

झ. कारणात्मक संबंध

30. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति (वास्तविक/क्षति का खतरा/वास्तविक बाधा) हुई है, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा है :

(i) चीन जनवादी गणराज्य और यू.ए.ई. से पाटित कीमतों पर हुए संबद्ध वस्तुओं के अत्यधिक आयातों के कारण घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतों को अलाभकारी स्तर पर लाने के लिए बाध्य हुआ है जिससे भारतीय बाजार में कीमत कटौती की स्थिति उत्पन्न हुई है।

(ii) चीन जनवादी गणराज्य और संयुक्त अरब अमीरात से हुए आयातों ने भारतीय बाजार में उत्पाद की कीमतों को उस सीमा तक कम कर दिया जिससे घरेलू उद्योग अपने उत्पादन की पूरी लागत वसूल करने और भारत में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से उचित लाभ अर्जित करने से वंचित हो गया।

31. अतः प्राधिकारी उपर्युक्त से यह नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से हुए आयात घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम कीमत पर हुए थे। इसके अलावा भारत में आयात घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत से कम कीमत पर हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटे उठाने पड़ रहे हैं। याचिकाकर्ता क्षमता उपयोग के तर्क संगत स्तर को भी प्राप्त नहीं कर सका था। ये मापदण्ड समग्र एवं संचयी रूप से यह इंगित करते हैं कि याचिकाकर्ता को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

झ. भारतीय उद्योग के हित

32. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना है जो देश के सामान्य हित में है।

33. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटन द्वारा प्राप्त होने वाले अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग के ह्रास को रोका जा सकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।
34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से ताइवान, हांगकांग और सिंगापुर से आयात किसी भी तरह कम नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता अब भी आपूर्ति के दो अथवा इससे अधिक स्रोत रख सकेंगे।

ज. निष्कर्ष

35. पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:
- (i) संयुक्त अरब अमीरात और चीन जनवादी गणराज्य से भारत को विट्रिफाइड/पोर्सलैन टाइल्स का निर्यात इनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;
 - (ii) भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है
 - (iii) यह क्षति संचयी रूपसे संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण हुई है।
36. प्राधिकारी घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के उद्देश्य से संबद्ध देशों से हो रहे विट्रिफाइड/पोर्सलैन टाइल्स के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन का मार्जिन ऊपर पैराग्राफों में दिया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति का निर्धारण करने के उद्देश्य से आयातों की पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कंपनियों की क्षति रहित कीमत से करने का प्रस्ताव किया गया है।

तदनुसार, प्राधिकारी उपर्युक्त पैरा 6 में व्यक्त किए गए अभिमतों के अधीन अंतिम निर्धारण होने तक संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क कोड 69 के अन्तर्गत आने वाले विट्रिफाइड/पोर्सलैन टाइल्स के सभी आयातों पर केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से नीचे यथा

निर्धारित निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। पाटनरोधी शुल्क नीचे दी गई तालिका के कालम-3 में उल्लिखित राशि और कालम-2 में नामित देशों के सभी निर्यातकों/ विनिर्माताओं के लिए विट्रिफाइड/ पोर्सलैन टाइल्स के प्रति वर्ग मी. आयात वर्ग मी. आयात पर होगा :

क्र० सं०	देश / निर्यातक	शुल्क की राशि अमरीकी डालर/ वर्ग मी०
1.	2	3
1.	<u>यूएई</u>	
	1. मै० रॉक सेरामिक्स	0.74
	2. सभी अन्य निर्यातक/उत्पादक	5.54
2.	<u>चीन जनवादी गणराज्य</u>	
	सभी निर्यातक / उत्पादक	8.28

37. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के तहत सीमाशुल्क द्वारा यथा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9 क के तहत लगाए गए सीमाशुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्क शामिल होंगे।
38. उपरोक्त के अधीन प्राधिकारी दिनांक 3 दिसम्बर, 2001 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।
39. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय प्रायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी।

एल. बी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 4th February, 2003

FINAL FINDINGS

Subject :— Anti-dumping investigation concerning import into India of Vitrified/Porcelain Tiles originating in or exported from China PR and UAE—Final Findings.

No. 37/1/2001-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The Procedure described below has been followed:
 - (i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified Preliminary Findings vide Notification No. 37/1/2001-DGAD dated the 3rd December, 2001 with regard to Anti Dumping investigations concerning imports of Vitrified/ Porcelain Tiles (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR and UAE (hereinafter referred to as subject countries) and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
 - (ii) The Authority forwarded a copy of the Preliminary Findings to known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the Preliminary Findings within forty days of the date of the letter;
 - (iii) The Authority also forwarded copy of the Preliminary Findings to the Embassies of subject countries in New Delhi with a request to furnish their views on the Preliminary Findings;
 - (iv) The Authority held a public hearing on 2nd July 2002 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry, importers and exporters from UAE. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions/rejoinders of views expressed orally. The written submissions/rejoinders thus received from interested parties have been considered by Designated Authority in this finding;
 - (v) The Authority made the public file available to all interested parties containing non-confidential version of the evidence submitted by various interested parties, for inspection, upon request;

- (vi) Arguments raised by interested parties before announcing of Preliminary Findings, which have been brought out in the Preliminary Findings dated 3rd December, 2001 have not been repeated herein for sake of brevity. However, arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt with in the Preliminary Findings and/or these findings;
- (vii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 17th January, 2003 and comments received on the same have also been duly considered in these findings;
- (viii) Investigation was carried out for the period starting from 1st April; 2000 to 31st March, 2001
- (ix) The on site verification of exporter's data was carried out at the premises of exporter, i.e. M/s RAK Ceramics at UAE.
- (ix) **** in the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the Rules.

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY:

2. VIEWS OF INTERESTED PARTIES ON OTHER ISSUES:

a) VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY:

- (i) We have preliminary objection with regard to certain importers to appear before the oral hearing before the Designated Authority. As per Sub-Rule 6(4), the information called by the Designated Authority shall be furnished by the persons in writing. Therefore there is unambiguous obligation under Rule 6 on the interested parties to provide information. The scope and the obligations of Rule 6(4) and 6(6) are not linked to each other since the Rule 6 follows a sequential order giving the rights and obligations to different interested parties. Therefore it is our submission that the Authority may kindly not take cognizance of the submissions made by all those interested parties who have failed to fulfill their legal obligations under the Rules. We also object to the opportunity being given to certain interested parties to comment on the case of the petitioners without the balancing right being made available to the petitioners which is violation of the principle of natural justice.
- (ii) It has been argued by importers/exporters that it is not in consumer interest to levy anti dumping duty. The major exporter M/s RAK Ceramics from UAE have themselves admitted that they supply 3rd and 4th quality tiles to India. Consumer interests cannot be furthered by bringing in 3rd and 4th quality products.
- (iii) The judgement of Hon'ble Supreme Court in the case of Designated Authority Vs. M/s Haldor Topsoe is relevant regarding the issue of right of

interested parties to make the oral submissions and in this regard we reiterate our submissions as made earlier.

- (iv) It has been mentioned that the petitioners were required to submit costing, selling price and other information on model to model and grade to grade basis and that in absence of this, application cannot be considered. It has also been argued that this mistake cannot be rectified at this stage. In this regard, it is submitted that the Domestic Industry has submitted the information as per Rule 5(1) and (2). Designated Authority has examined the standing of the petitioner and has indicated in its initiation notification dated 6.8.2002.
- (v) The Anti dumping Rule 5(3) is two-fold viz.
- (i) a determination prior to initiation is required to be done by the Designated Authority only with respect to the issue of 'standing' and not for dumping, injury or the causal link
 - (ii) an examination of the accuracy and adequacy of evidence, coupled with the satisfaction of the Designated Authority, as to the sufficiency of such evidence. The argument of the representative of the exporter that there must be a complete determination on all issues, is entirely contrary to the sequential basis of conducting such proceedings under the statutory provisions. As long as there is satisfaction as to the sufficiency of evidence, there is no further requirement of a determination let alone a determination on a model to model or grade to grade basis.

b) **VIEWS OF BUILDER ASSOCIATION OF INDIA:**

- (i) The availability of imported products has been a boon to the industry and Indian consumers and have played a major role in substantially expanding market for Vitrified Tiles.

c) **VIEWS OF M/S TRISHLA DISTRIBUTORS:**

- (i) The Authority has not acknowledged the submissions made by hundreds of consumers organizations, traders, importers and distributors who have filed their submissions well before the preliminary findings.

d) **VIEWS OF M/S KENT CERAMIC TILES COMPANY PVT. LTD. & M/S KAJARIA CERAMICS:**

- (i) The petitioners have misconstrued the provisions of Rule 6. The Rule 6(4) and 6(6) are clearly independent. The Hon'ble Supreme Court in case of Haldor Topsoe has considered the issue on the method of determination of Normal Value and not the issue regarding whether importers are barred from making submissions under Rule 6.
- (ii) The failure and continued reluctance of the petitioner to separately categorise different types of Vitrified tiles so as to enable a proper appreciation of whether adequate evidence has been provided to establish

dumping, material injury and causal link is contrary not only to technical and commercial understanding but is also strictly in the teeth of the Dispute Settlement Panel Report of Argentina vs. Italy in respect of the import of Ceramic Floor tiles case.

- (iii) The failure of the importers to submit information could if at all affect the issues of export price and quantum of imports. This however does not deny the importers and other interested parties from an issue to make submissions on the issues of product under consideration, accuracy or adequacy of evidence, absence of material injury and absence of a causal link of alleged dumping.

e) **VIEWS OF M/S NITCO TILES:**

- (i) As per Rule 2 (c), the term interested party is not defined as an exporter or an importer who have submitted a questionnaire response. It refers to an exporter or importer per se without any further qualification. The term interested party includes even an association of importers, association of exporters and the Government of exporting country. These interested parties are not required to file response to any questionnaire prescribed by the Authority. Sending questionnaires and participating in an oral hearing are two different aspects of investigation. The only legal requirement under Rule 6(6) is that the said oral information should be taken into consideration only when it is reproduced in writing. Therefore objection by Domestic Industry is unfounded. We are grateful to the Authority for overruling this objection at the hearing itself. We have separately sent response to the importers questionnaire (both confidential and non-confidential version).
- (ii) The Domestic Industry should be directed to index the figures in various tables and that the non-confidential summary should be provided as per Article 6.5.1. Designated Authority should direct the Domestic Industry to resubmit the non-confidential version of the petition giving index figures where *** appears..
- (iii) The reference by the Domestic Industry to the case of M/s Haldor Topose Vs. Designated Authority has no relevance to the facts of the present case. In that case, an exporter did not furnish the information that was available in his possession and in that case the Supreme Court had held that the exporter cannot argue about the best information that the Authority has used. The Supreme Court did not say that as a consequence Haldor Topsoe cannot at all participate in the proceedings. In this case the response to importer's questionnaire has nothing to do with the submissions on material injury and causal link.
- (iv) The import data it appears has been compiled from the DGCI&S data by manual identification of the product under consideration. This methodology could be subjected to manipulation by the Domestic Industry. Clubbing all the product prices into one product has distorted the entire picture. In absence of any clear cut definition of product under consideration, all the subsequent stages of dumping, material injury and

causal link have been distorted and cannot be termed as objective and unbiased.

f) **VIEWS OF M/S RAK CERAMICS, UAE:**

- (i) The initiation of the investigation is bad and is not as per Rule 5. The complainant have not provided sufficient evidence in the application which is mandatory to establish prima facie dumping, injury and causal link. The applicants in their application have concealed the vital fact regarding several models and sizes for the two duct and their prices and continue to do so in spite of reminders to disclose information to that effect.
- (ii) The vital information on the product cannot be corrected retrospectively in view of the expressed provisions of Rule 5(3) (b) of anti dumping duties 1995. The complainant has been pursuing the product as one model and type for the purpose of determination of dumping and injury and underselling and undercutting phenomena and also NIP. The computation for model to model, grade to grade is essential. The initiation of the case in light of improper product description has therefore not passed the test of accuracy and adequacy of evidence and therefore the initiation is bad.
- (iii) The proposed provisional anti dumping duty is contrary to the provisions of Rule 13, Rule 17(3) of Rules, 1995, Article 6.10 and Article 2.4 of the Anti Dumping Agreement. The Authority has failed to make any adjustments for these apparent physical differences which affect the price comparability. The adjustments on level of trade, quantity discounts and credit cost have not been considered.

g) **VIEWS OF M/S. AL-KHALEEJ CERAMICS, UAE:**

M/s. Al Khaleej did not provide response as per the prescribed questionnaire. Subsequent to the preliminary findings, the exporter has made certain submissions which are as under:

- (i) In the initiation and the preliminary findings, there are glaring breaches of the WTO Agreement on Anti Dumping. In the present proceedings, the product is aggregated without the distinction of various grades which are of different quality and price. Even in proceedings such as Cold Rolled Steel plates, there were references to different grades. The aggregation of grades does not lead to an accurate determination of dumping, injury and causal link. Indian tiles manufactured at USD 2 per square mt. cannot be injured by the imports of tiles at USD 13 per square mt. or vice-versa.
- (ii) The initiation is not as per Article 5.3 and 5.8. The application lacks adequate and accurate evidences. The application is therefore not fully documented since it does not lead to grade to grade analysis of the product under consideration.

C. 3. VIEWS OF INTERESTED PARTIES ON DISCLOSURE STATEMENT ISSUED BY THE DESIGNATED AUTHORITY:

(i) VIEWS OF DOMESTIC INDUSTRY:

- (a) The gradation of RAK is done on the basis of quality of the vitrified tiles which are determined only after the tile is fully produced. The Designated Authority has consistently held that quality is not an issue for anti dumping matter. This position has also been confirmed by the CEGAT.
- (b) We have repeatedly requested that the classification of vitrified tiles into various grades must be supported by differences in physical specifications. These specifications have not been made known to us for our comments. Accordingly, the approach of the Designated Authority to carry out comparison on the basis of grade is wholly erroneous.
- (c) The Authority has rightly rejected the claim of RAK on apportionment of the cost of production of various types of tiles on the basis of sales realization.
- (d) A correct method of overhead absorption is essential for arriving at an objective cost estimate. The decision of the Designated Authority to apportion selling and distribution expenses and interest costs on the basis of sales realisation is erroneous. Interest cost is a factory overhead and needs to be allocated on the basis of direct cost and not on the basis of sales realisation. Allocating selling expenses on the basis of sales realisation misses a crucial point that the effort involved in selling the product remains same irrespective of size/grade/model. To distribute this component of cost the correct method will be size-wise allocation of selling overheads. Distribution cost will not vary with the sales realisation. Allocation of distribution cost on the basis of sales realisation is erroneous.
- (e) In light of the above, the domestic industry has requested Designated Authority to rework the dumping margin for M/s RAK Ceramics.
- (f) Adjustments on packing cost can be claimed only to the extent that the packing for the goods meant for domestic consumption is different for the goods meant for exports. Packing expenses cannot be deducted from the cost of production for the purpose of carrying out the ordinary course of trade test.
- (g) M/s RAK Ceramics has not submitted Appendix 3 to Appendix 10 in the non-confidential version of the Exporter Questionnaire. In the absence of information relating to the share of interest cost, selling and distribution expenses in the total cost of the exporter we cannot definitely say what impact the erroneous method will have on the normal value and hence the dumping margin in the case of particular exporter.

(ii) **VIEWS OF EXPORTER:**

M/S RAK CERAMICS, UAE:

- (a) They have already submitted complete details regarding sales in the domestic market alongwith basis on which the level of trade adjustments has been claimed. This information was submitted by RAK alongwith submissions to the exporters' questionnaire and during the investigation proceedings. Now as indicated and desired by the Authority that for the purpose of adjustments for level of trade, comparison needs to be done grade wise, model wise for a particular size between end-users and traders in the domestic market this information. This information has been adequately submitted to the Designated Authority. Based on the data submitted by M/s RAK the exporter has claimed the adjustment for the level of trade as **** %.
- (b) The Authority has accepted that the subject goods are being exported into country by RAK and also produced and sold by the Domestic Industry in different sizes, grades, models, polished and unpolished. Therefore prices of the subject goods vary according to these different features. Since the landed costs of different tiles of different sizes, grades and models vary substantially, giving one reference price will lead to a situation where all grades will be bench marked at one reference price, at one reference price. This will contradict the basic findings of the Designated Authority regarding acceptance of grades/sizes and models. The levy of anti dumping duty at a reference price will result in a situation where effective duty is higher than Dumping Margin in number of sizes/grades/models. In support of the argument raised above the exporter has cited three cases where the Authority has recommended anti dumping duty on reference price basis in the Preliminary Findings and in the Final Findings the Authority has recommended fixed duty. The exporter has submitted that if at all anti dumping duty is recommended, the same may be a fixed duty against variable duty imposed in the Preliminary Findings.
- (c) On issue pertaining to Injury and Causal link the exporter has reiterated his arguments as raised during the course of investigation.

(iii) **VIEWS OF IMPORTERS:**

(i) **M/S. NITCO TILES LIMITED:**

- (a) The Authority has correctly recognized and proposed to determine different normal values for different sizes, models/grades etc. for M/s RAK Ceramics from UAE. This logic cannot be ignored when it comes to China. Accordingly it is necessary to arrive at a constructed normal value for different sizes/models/grades. The single normal value indicated for China does not reflect the changes that are required due to differences in sizes, models, grades, level

of polish etc. The Authority shall determine different normal value for tiles of different sizes, models, grades etc. and compare the same with the export price of respective sizes, models and grades.

- (b) The imports starting coming into the country with effect from 1.4.2000. Earlier to the same the domestic industry was having a 100% market share. The domestic industry cannot hope to retain 100% of the market even after imports were allowed into India. The mere fact that domestic industry does not enjoy 100% market share does not indicate any injury.
- (c) As proposed in the disclosure statement the Authority shall evaluate all the 15 injury parameters.
- (d) The price undercutting shall be determined not at CIF level of import but only at the prices at which the imported goods are resold in the domestic market.
- (e) The Authority should disclose the methodology of calculating Non Injurious Price of the domestic industry similar to non-confidential disclosure of the dumping margin.

(ii) **M/S. TRISHLA DISTRIBUTORS:**

- (a) The cost price of the local manufacturer do not appear to have been taken into consideration.
- (b) Because of non-receipt of information from manufacturer from China, it is unfair to the importer that his views are not considered. Therefore views of the importer from China may also be considered.
- (c) If the Authority feels to levy anti dumping duties the local manufacturer prices should also be considered and the quantum of anti dumping duty needs to be reduced. 'From the price list of M/s HR Johnson India it is clear that while a local manufacturer price before payment of excise duty is only USD *** and USD *** respectively, the import price before payment of additional duty to be adopted as per proposal is USD 13.62. This is clearly discriminatory and as such without prejudice to the contention that no anti dumping duty is to be imposed.

4. **EXAMINATION BY AUTHORITY:**

- (i) The Authority notes the submissions made by various interested parties regarding the opportunity to be granted to those importers who have not filed the questionnaire response as per the prescribed format of the Designated Authority for participating in the public hearing. The Authority also notes submissions made by various interested parties that a number of consumers/traders and users of the Vitrified Tiles had filed information to the Designated Authority for consideration before the preliminary findings which have not been acknowledged. The Authority also notes the

representations received from certain interested parties that they have not been invited for the public hearing.

- (ii) The Authority in this regard holds that filing of a questionnaire and participating in a public hearing as per Rule 6 are two independent obligations and that is in the interest of the investigation and natural justice that even though an interested party has not filed any information as such on the issue of export price may make submissions on issues which may not be emanating from his response had he filed the same. The Authority also holds that though various submissions were made by various architects/dealers/users in favour of non-imposition of anti dumping duty keeping in view the wider availability of good quality tiles from the subject country, a number of submissions have also been received in support of levy of anti dumping duty. Those supporting anti dumping duty have indicated the imports from the subject country being of low quality with under-invoiced pricing and hitting the Domestic Industry adversely.
- (iii) The Authority notes that these are generic issues in support or against imposition of anti dumping duty rather than on specific technical aspects of dumping, injury and causal link which the Authority is to examine under the relevant Anti Dumping Rules. The Authority therefore has examined those issues which are pertinent to investigation and have a bearing on the critical parameters of the investigation. The Authority has also considered the submissions on quality and choice of consumers in light of its consistent practice of addressing the aspect of increased competition and the wider availability of goods as being considered in its earlier determinations. As regards those who have informed that they were not invited to participate in the public hearing, the Authority in view of the observations in the above para. has taken on board the relevant issues pertaining to investigation as provided in their submissions.
- (iv) As against initiation of the case, the Authority notes that the case was initiated in accordance with Rule 5(3) (a) and (b). The fact of dumping from PR China is not disputed as there is no response and the prima facie evidence of dumping from UAE was referenced on the basis of a price list which is a reasonable evidence for the purpose of initiating an investigation. The issue pertaining to exclusion of specific products, and appropriate comparison of dumping and injury has appropriately deal with in the Final Findings.
- (v) All issues raised by various interested parties in response to the Disclosure Statement have been examined by the Authority and appropriately dealt in the Final Findings.

5. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE:**(a) VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY:**

- (i) The description of the product under consideration has been done on the basis of the technical specifications, national and international standards. The criterion of water absorption of less than or equal to 3% is also based on national and international standards. We would like to reiterate that all tiles falling under the scope of product under consideration should be subjected to anti dumping duties irrespective of the custom classification under which they are cleared.
- (i) The petitioners has claimed that all types of unglazed tiles are classified in chapter heading 69.07. However, unglazed tiles are also being imported under chapter heading 69.14 as other articles of porcelain. In addition, glazed porcelain tiles are being imported under chapter heading 69.14 with various descriptions like G.P. Tiles, Porcelain Tiles, Gres Porcelenato Tiles, Porcelain Vitrified Tiles, etc. It has further been stated that the Glazed Porcelain Tiles, being imported under chapter heading 69.14 are substitutable with the unglazed tiles of chapter heading 69.07 in terms of properties, uses, functions, distribution channels etc. Petitioners have further submitted that Glazed Porcelain Tiles are erroneously being classified under chapter heading 69.14 by many importers. These products are rightly classifiable under chapter heading 69.08 as Glazed Tiles. Therefore, petitioners requested that the investigations be carried out against the product under consideration irrespective of the classification under which they are being imported.
- (ii) As regards the argument by the Counsel for RAK Ceramics that the Domestic Industry does not make vitrified tiles in sizes 98 x 98 cm or 120 x 180 cm, it is submitted that the said sizes do compete directly with the product range of the Domestic Industry and would be adequately covered by the scope of the term 'like article' under the Anti Dumping Rules. The claim of RAK that the Domestic Industry does not manufacture Rustic, Stone, Opficium, Antica, Mosaico, Metallica, Al-hambra etc. is of no consequence as these are names given to their designs. Our plants can make similar designs and effects and therefore, there is no reason to agree to the exclusion of certain manufacturer-specific design names.

(b) VIEWS OF M/S TRISHLA DISTRIBUTORS:

- (i) The product under consideration is Vitrified or Porcelain Tiles of water absorption upto 3%. The petitioners also produce Vitrified Tiles having water absorption levels as 0.5%. The tiles are sold in number of sizes, colours and designs and their costs as well as prices vary. This issue has been conveniently overlooked by the petitioners companies who have also

sold their products at prices which vary significantly in terms of per square metre. All different types of products cannot be combined.

- (ii) The scope of investigation is not clearly defined. The present investigation also tends to include Ceramic Mosaic tiles.

(c) **VIEWS OF M/S KENT CERAMIC TILES COMPANY PVT. LTD. & M/S KAJARIA CERAMICS:**

- (i) The product under consideration is of a wide coverage. It also includes Ceramic Mosaic Tiles which are not commercially substitutable and are imported at prices much less than vitrified tiles.
- (ii) The tiles are of different characteristics, style, prices and uses. The ISO 13006 is of international standard for tiles and it recognizes the different categories of Tiles as A: extrudes, B: dry pressed and C: tiles made by other processes. On the basis of the water absorption capacities, it recognizes them under Group 1 to Group III. Further the categories are also categorized under sub-categories.
- (iii) The product description adopted by the petitioners covers products of various prices. The Porselano range of HRJ for a 60 x 60 tile is priced at Rs.884/- per sq. mt and the Chinese Vitrified tiles have an MRP of Rs.1022/- per sq. mt. While the HRJ Marbonite range of tiles have MRP of Rs.1,111/- per sq. mt., the Porselano range of HRJ and the Marbonite range of HRJ, both of which fall under the product descriptions are clearly competition interse, with Porselano range being priced even lower than the imports.
- (iv) It is submitted that Ceramic Mosaic Tiles be excluded from anti dumping duty and the proceedings be terminated under Rule 14(b) and that there should be no anti dumping duty on imports from China and that the reference price should be lower as the margin of dumping has been miscalculated.

(d) **VIEWS OF M/S NITCO TILES :**

The product under consideration has not been defined in sufficient details to enable the Authority to analyse the existence of dumping, injury and causal link. The product under consideration should be defined properly before sending questionnaire to the exporter and for evaluating injury to the Domestic Industry as also the causal link. Since this has not been done, the investigation should be terminated.

(e) **VIEWS OF M/S RAK CERAMICS, UAE:**

There are certain models of 98 x 98 cm or 120 x 180 cm or variety of any tiles like rustic, stone, antica, mosaic, opficium, metallica, A1-Hambra etc. for which the Domestic Industry does not have production facility, technology or know-how. To that extent, there is no causal link for these products.

(d) **VIEWS OF M/S. AL-KHALEEJ CERAMICS, UAE:**

The Authority has unilaterally and without opportunity extended, the proceedings beyond its initial scope by also considering data in the context of Mosaic ceramic tiles which were never subject matter of the original proceedings initiated.

6. **EXAMINATION BY AUTHORITY:**

- (i) The Authority notes that the product under consideration has been defined as "Unglazed tiles in polished or unpolished finish and Glazed Porcelain/Ceramic tiles both with less than 3% water absorption (commonly known as Vitrified Tiles/Porcelain Tiles)" originating in or exported from subject countries" in the preliminary findings dated 3rd December, 2001 under Para F. Many interested parties have indicated that the product under consideration is too generic and should have been categorised under various categories of grades, models, sizes, etc. at the time of initiation itself. It has also been indicated by certain interested parties that tiles like Mosaic tiles which are different from Vitrified Tiles are also covered under the scope of investigation. It has also been submitted by one of the interested parties that certain superior quality tiles like rustic, stone, antica, mosaic, opficium, metallica, A1-Hambra are not being manufactured by the Domestic Industry. The Authority after examining various submissions has considered the product under consideration as defined in the preliminary finding. On the argument on exclusion of Mosaic Tiles it is reiterated, that Mosaic tiles are excluded from the scope of investigation which would not fall under the category of the product under consideration as defined in Para F of the preliminary findings dated 3.12.2001. Since Vitrified Tiles have been specifically defined with water absorption less than 3%, to that extent the product is clearly defined and the Authority confirms the same in the final findings. The names of the tiles provided by the exporter, M/s RAK Ceramics, UAE are commercial names and as have not been demonstrated by appropriate evidence to be outside the scope of investigation.
- (ii) With regard to the claim of the Domestic Industry that the subject goods are being imported under different customs classifications the Authority reiterates its consistent position that Anti dumping investigations are on

the product under consideration, irrespective of customs classification. So long as the imported product confirms the product under consideration it will attract anti dumping duty. Customs classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

- (iii) As regards the issue of categorization of the product is concerned, the Authority holds that the aspect of categorization is relevant for the purpose of determining dumping margin appropriate as per Article 2.4 of the WTO Agreement and Para 6 of Annexure 1 of the Indian Anti Dumping Rules and also Para (vi) of Annexure II of Anti Dumping Rules. However, the aspect of categorization does not alter the definition and scope of product under consideration as was defined in the preliminary findings dated 3rd December, 2001 under Para F.
- (iv) With regard to Rule 2(d) of the Anti Dumping Rules which defines "Like Article" the exporters/importers have argued that the tiles imported by them are of different quality. However, no evidence has been adduced by them to indicate that the imported tiles are not substituting the domestically produced tile either technically or commercially. The Authority notes that the vitrified/porcelain tiles produced by the Domestic Industry has characteristics which are similar to those of the tiles imported from the subject countries. The channels of distribution, end-use etc., also indicate that the imported tiles are like articles to the product under consideration. In view of the above, the Authority holds that Vitrified/Porcelain tiles produced by the Domestic Industry and those being imported from the subject countries are "Like Articles" within the meaning of the Rules.

(b) **DOMESTIC INDUSTRY:**

- (i) As per Rule 2(b) of the Anti Dumping Rules, "domestic industry means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry."
- (ii) The definition of Domestic Industry given above is further clarified by Rule 5 of Rules which reads as follows:-

"----- the application shall be deemed to have been made by or on behalf of the domestic industry, if it is supported by those domestic producers whose collective output constitute more than fifty percent of the total production of the like article produced by

that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition as the case may be to the application.

(iii) **STANDING OF DOMESTIC INDUSTRY:**

The petition has been filed by M/s. SPL Ltd., M/s. H&R Johnson India Ltd. and M/s. Murudeshwar Ceramics Ltd. The petitioners account for almost 60% of the total Indian production in terms of Sq. Meters of the subject goods. The Authority notes that the submissions have been made regarding wrong initiation under Rule 5. The issue of standing has also been argued by certain interested parties to extent that the product under consideration was not specifically categorized. The Authority in view of the above clarification for the product under consideration confirms the standing of the Domestic Industry as held in the preliminary findings dated 3rd December, 2001 in Para H. As the product under consideration is unaltered, no re-look on the standing issue is required, the Authority therefore confirms the standing as defined in the preliminary findings.

D. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN:

7. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:-

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-
 - (a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) The cost of production of the same article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);
 - (c) Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable

price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

- (d) The Authority provided opportunity to the exporters from subject countries to furnish information relevant to the investigations and offer comments, if any, in accordance with the Section cited above. The Authority wrote to the Embassies of subject countries in India also.

8. **VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY:**

- (i) M/s RAK Ceramics, the only cooperating exporter from UAE have themselves admitted that they are engaged in supplying 3rd and 4th quality and residual grades and quality tiles to India. Therefore M/s RAK Ceramics is not only indulging in price dumping but also resorting to dumping of sub-standard goods to India.
- (ii) The product under consideration is not covered under a dedicated head of DGCI&S and therefore Domestic Industry had to rely upon sources other than DGCI&S to compile the exporter information. Para 7 of Annexure-II of the WTO Agreement merely cautions the Authorities to exercise special circumspection while using the secondary data. Since the exporter has submitted grossly deficient information, the Authority has rightly resorted to Rule 6(8).
- (iii) The Designated Authority has relied upon the price list of the exporter himself and therefore the rigors of Para 7 of Annexure-II are also satisfied.
- (iv) It has been alleged by M/s RAK Ceramics that prima facie evidence with regard to the normal value is bad in law as reliance has been placed on unbinding price list of one of the UAE producers. The importers have also mentioned that the evidence is bad as the petitioners have not supplied even a evidence of a concluding contract. The Domestic Industry in view of the negotiated price cannot be expected legally or in practice to get the confidential documents of two commercial entities. As per Para 1 (a) of Para III of the Application proforma, price list can be a reasonable indication of the Normal Value in the market of the export.
- (v) It has been argued by M/s RAK Ceramics that the Domestic Industry ought to have given model-wise information to Designated Authority for initiation of the case. Article 2.4 of WTO was referred in this regard. It is submitted that the reliance of M/s RAK Ceramics on Article 2.4 is totally misconceived as this Article pertains only to the comparison of Normal Value and export price for the purpose of dumping margin. There is no mention of such a comparison to be made between the models of the

exports and the products of the Domestic Industry. We request the Designated Authority to confirm the preliminary findings in this regard.

9. **VIEWS OF BUILDER ASSOCIATION OF INDIA:**

- (i) The order passed by the Hon'ble High Court of Gujarat at Ahmedabad in Special Civil Application No.11935 of 2001, with Civil Application No.96 of 2002 and Civil Application No.148 of 2002 in the matter of Surfaces Plus through Partner Dilip Shah versus Union of India on January 9, 2002 held that:-

"By our earlier order dated 27.12.2001, we allowed the petitioner (M/s Surfaces Plus through Partner Mr. Dilip Shah) to make a representation to the Central Government on the preliminary findings. However, at this stage, we direct the Central Government, before issuing the notification of provisional duty, to consider the representation of the petitioner in accordance with law. The intervenors shall also be given an opportunity to make a representation along with other parties.

- (ii) However to our great dismay, we learn that provisional anti dumping duties of 300% have been levied on imports of such tiles from China and UAE. It is not clear as to why a uniform prices at US\$ 13.62 per square meter can be arrived at for all Vitrified tiles which can be quite dissimilar to each other on various matters like size, design, method of decoration etc.

10. **VIEWS OF M/S TRISHLA DISTRIBUTORS:**

The Normal Value in case of M/s RAK Ceramics has been taken on the basis of a price list which only an offer price and there are further discounts depending upon quantity offered and competition. The price lists are also not static. The dumping margin has to be evaluated in accordance with the provisions of Custom Tariff Act, 1975 while looking at the domestic selling price of the exporters.

11. **VIEWS OF M/S KENT CERAMIC TILES COMPANY PVT. LTD. & M/S KAJARIA CERAMICS:**

- (i) The information has been taken by petitioners from the International Business Information Service. The petitioner has also included in the export price the import price of Mosaic Tiles and which has reduced the landed value. The petitioner has sought to fill in the gap that the importer should provide such information. The provision places a strict onus of proof on the petitioners and the proceedings cannot be initiated where the petitioner hopes to pick up essential information during the course of the proceedings.

- (ii) The Dispute Settlement Body has issued a Panel Report dated October, 2001 as to Ceramic Floor tiles from Italy in proceedings initiated by Argentina. In the report, it is seen that three distinct categories based on size and determining the dumping margin and all other issues were based on three categories. The petitioners have failed to make the appropriate categorisation of the product and consequently the entire proceedings are ill-defined. The indices on sales volume, sales value, per unit realisation, capacity utilisation and production have been positive for the Domestic Industry. Also the imports constitute 3.36% of the market demand. The average selling price of indigenous production is above the reference price fixed by the Designated Authority
- (iii) The levy of anti dumping duty at a reference price is not sustainable as there could be situations where effective levy is higher than both the margin of dumping and the margin as determined during the POI.
- (iv) As regards the information from secondary sources, export prices have been reworked by the petitioner. In these circumstances, the caution particularly in view of that as even the secondary source information has been reworked by the petitioner is accepting this data be followed.

12. VIEWS OF M/S RAK CERAMICS, UAE:

- (i) The petitioners have accepted the provision of Article 2.4 though late. The provisions of Article 2.4 would also be ipso facto apply on determining of price undercutting and underselling margins for which the comparison have to be done model to model, grade to grade and then a weighted average margin has to be done at without actually zeroing. In the absence of model to model, cost of production information in the Domestic Industry, it would also be difficult to determine as to whether the domestic sales of model used in comparison are in normal course of trade or not.
- (ii) M/s RAK Ceramics subsequent to the preliminary findings have also provided information pertaining to technical specifications of their various models and grades, sales price structure for domestic sales and exports to India on a non-confidential basis, additional information to the exporters questionnaire on a confidential basis indicating the statement of raw material consumption and resale for the POI and the cost of production for various grades.
- (iii) M/s RAK have also provided on a confidential basis the costing principles from a secondary source in support for computation of costing done by them on model to model and grade to grade. Comparison using the cost of production as evaluated for a specific model or grade has also been

demonstrated indicating the weighted average dumping margin which is evaluated as de-minimis.

- (iv) The grounds on which the exporter's data has been rejected for the purpose of preliminary findings are unsustainable, on unfounded premises and on false attributes. M/s RAK has provided the non-confidential summary of the confidential information filed by them and that it is only their business information which has not been provided in the non-confidential version.
- (v) M/s RAK was never informed of further evidence or information which was required by the Authority or that the information submitted with the response were being rejected along with the reasons thereof and that no opportunity was granted to them to explain or provide any further information. The rejection of information submitted by them is also inconsistent with the provisions of Article 17.6 of the WTO's Anti Dumping Agreement.
- (vi) Vide letter dated 16.12.2002 and 17.12.2002, M/s RAK Ceramics have responded to the letter dated 1.11.2002 and 15.11.2002 of the Directorate General of Anti Dumping and Allied Duties and have submitted the information on Normal Value, cost of production and adjustments thereof.

13. **M/S AL-KHALEEJ CERAMICS, UAE :**

The reference price mechanism would result in a situation wherein in the levy of anti dumping duty would be in excess of lower of the margin of injury and dumping. This is unsustainable under Article 9.1 and 9.3 of the WTO Agreement.

14. **EXAMINATION BY AUTHORITY:**

(i) **M/S RAK CERAMICS, UAE:**

The Authority notes that subsequent to the preliminary findings, the exporter had filed information vide their letters dated 28.12.2001 and 25.6.2002 indicating the scheme of categorization of grades, reconciliation of the raw material and cost of production, domestic sales realisation and has highlighted the principle pertaining to which they had evaluated the cost of production of different grades and tiles as per joint costing principles. The Authority also notes that subsequent to the public hearing, the verification dates for 19th and 20th August, 2002 were finalised in consultation with the exporter for verification of their data at their premises. When on account of certain administrative reasons, the verification could not be conducted on 19th and 20th August, 2002, verification dates of 31st August and 1st September, 2002 were agreed.

However, vide fax dated 24.8.2002. M/s RAK Ceramics informed Directorate General of Anti Dumping & Allied Duties that the verification needs to be postponed by two months until end of October, 2002. The Authority vide letter dated 1st November, 2002 desired the exporter to submit additional information and clarification including that the information in Appendix 4 of Volume 8 and the information provided in Volume 4 of the submissions does not tally and that sample invoices for exports and domestic sales indicating size, grade and model of tiles be given. Appropriate invoices/names of the buyers and the evidence regarding sale to end users so as to consider the level of trade adjustments, documentary evidence pertaining to discounts, freight and packing on the domestic sales, evidence on cost of credit on the domestic sales were also called for. Subsequently the Authority vide letter dated 15th November, 2002 had desired information pertaining to average cost of different sizes/types of such types manufactured during the period of investigation in Appendixes 8, 9 and 10. It was stated that the cost indicated in these appendices should also reconcile with books of accounts/profit and loss account. Vide letter dated 5th December, 2002, the representative of the exporter desired 10 days to file the information pertaining to the letters dated 1st November, 2002 and 15th November, 2002 sent by the Authority. Thereafter vide letter dated 16.12.2002 and 17.12.2002, the representative of the exporter filed information in response the letters dated 1st November, 2002 and 15th November, 2002. Clarifications were also provided by the exporter. The Authority, thereafter, carried out the verification at the premises of M/s. RAK Ceramics on 6th/7th January 2003 and verified the cost of production and various adjustments on the domestic and export price.

In response to the Disclosure Statement the exporter has further tried to establish/justify his claim for adjustment on account of level of trade by providing detailed comparison of grade wise, model wise sale for a particular size between end-users and traders in the domestic market. Since this information has been submitted by M/s. RAK after the verification and issue of Disclosure Statement the Authority holds that acceptance of the same at this stage is not appropriate. Hence, the claim of the Exporter with regard to adjustment on account of level of trade has not been considered.

NORMAL VALUE:

- (a) The Authority notes that the exporter has claimed different cost of production for different grades of the vitrified tiles manufactured and exported by them. The Authority in this regard also notes that the principle adopted by the exporter on apportionment of the cost of production is not realistic. The direct costs which have gone into the manufacturing of each grade cannot be apportioned on the basis of the

lower sales realisation, if any, realised from the market. The Authority has considered the actual costs except selling and distribution and interest costs size wise, and has apportioned the selling and distribution and interest cost on the basis of sales realisation for each size/grade/model.

- (b) In view of this, grade-wise/model wise cost of production pertaining to a particular size of vitrified tiles has been evaluated. Further as the tiles have been indicated as polished and unpolished, the costs for polished and unpolished have also been evaluated separately. The Authority has therefore evaluated the cost of production for different sizes of vitrified tiles grade-wise/model wise for both polished and unpolished tiles. The Authority has considered cost of production including raw materials, utility, labour cost, depreciation and manufacturing overheads for each size of Vitrified Tiles. SGA, and interest cost has been allocated on the basis of sales value of different models and grades of tiles so as to arrive at the total cost of each grade/model type of tile. During verification it was noted that the exporter is selling the product Vitrified Tiles both in domestic and export markets as various grades. This was also evidenced from the commercial documents of domestic and export sales. Also different grades of ceramic tiles were distinguished in terms of their physical characteristics during the production and sorting process. Data made available by the Domestic Industry and other interested parties also evidences the categorization of the product under consideration on grades based on quality pertaining to the production and sales of the Domestic Industry. The Authority in view of the fact that the grades of Vitrified/Ceramic tiles are clearly distinguishable considers it appropriate to apply the ordinary course of trade test as per Annexure 1 for different sizes/models at the grade level. The Authority also notes that the exporter has sought adjustments on freight, credit cost, level of trade adjustment, discounts and packing. The Authority has considered adjustments as evidenced on all these adjustments except level of trade, wherein the Authority notes that regarding level of trade exporter has not provided appropriate information on comparison grade wise and model wise for a particular size between the end user and trader in domestic market during verification and that the comparison made on an average basis does not appear to be realistic. The Authority notes that as regards export sales also, the exporter has not substantiated that the sales to India have been made exclusively to traders only. The Authority has considered adjustments on account of freight, discounts, credit costs and packing only and has evaluated the Normal Value size-wise, grade-wise and model wise separately for polished and unpolished category.

The weighted averaged Normal Value comes to ****\$/square mt..

EXPORT PRICE:

- (a) As regards the export price, the Authority has allowed adjustments on account of freight and packing as claimed by the exporter on C&F and also noted during verification that a credit of *** days is granted on export sales. 0.5% insurance has been added on the C&F value to arrive at CIF price so as to evaluate the landed value for determining the price undercutting.
- (b) The Authority therefore has evaluated dumping margin of the subject goods exported to India by making comparisons size-wise, grade-wise and for polished and unpolished category separately wherever one to one comparison of a particular model is not feasible on account of no domestic sales. the weighted average cost of production with appropriate profit has been referenced for a particular grade and size.

The weighted average ex-factory export price comes to ***\$/square mt..

The dumping margin comes to 13.27%

15. **OTHER EXPORTERS/PRODUCERS (OTHER THAN M/S RAK CERAMICS) FROM UAE:**

The Authority has considered the Normal Value of the subject goods for the non-cooperating exporters as per the methodology considered in the preliminary findings on the basis of the petitioners data with appropriate adjustments and has considered the ex-factory export price for such exporters by referencing the average export price evidenced from the data submitted by the cooperating exporter. The dumping margin is assessed as 99%.

16. **ALL EXPORTERS/PRODUCERS FROM PR CHINA:**

NORMAL VALUE:

The Authority notes that after the Preliminary Findings also, response has not been filed by any of the exporters/producers from PR China in the prescribed questionnaire and therefore there has been no cooperation from any of the producers/exporters from PR China. The Authority therefore confirms the methodology as indicated in the preliminary findings dated 3rd December, 2001 and adopt the Normal Value for such producers/exporters on the basis of best available information as per Rule 6.8 as done in the Preliminary Findings.

The Normal Value is considered as ***\$/square mt..

EXPORT PRICE:

As regards the export price, the Authority notes the submission that DGCI&S data is not appropriate for evaluating the export price as also held in Para 12 of the Preliminary Findings dated 3rd December, 2001. It was indicated by certain interested parties in the public hearing and thereafter also in their submissions made to the Authority that the price of Mosaic Tiles is also included in the export price as per the secondary information provided by the petitioners. It has also been mentioned that these are not part of the product under consideration and by their being at a lower price, the landed value has been lowered thereby inflating the injury margin. In view of the submissions, the Authority reconfirms the information as available from the secondary source and provided by the petitioner by considering those transactions which are relevant for the product under consideration. The Authority also notes that subsequent to the public hearing, one of the importers M/s NITCO Tiles have provided information of their imports of the subject goods during the period of investigation from PR China. The Authority has correlated this with the information on the export price as available from the secondary source provided by the petitioners. The Authority has referenced the information on CIF as provided by M/s NITCO Tiles and as by the petitioner for imports other than those made by M/s NITCO who have provided the actual imports data made by them and consider adjustments on ocean freight and ocean insurance as per importer's information and port expenses, inland freight and commission adjustment on CIF as per the consistent norm of considering these @***%, ***% and ***% of CIF respectively.

The ex-factory export price comes to ***\$/square mt

The dumping margin on the basis of the above comes to 290%.

E. INJURY AND CAUSAL LINK:

17. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows:

"Determination of Injury:

- (i) In the case of imports from specified countries, the Designated Authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India:

- (ii) The Designated Authority shall determine the injury to Domestic Industry, threat of injury of Domestic Industry, material retardation to establishment of Domestic Industry and a causal link between dumped imports of injury, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules."

18. The principles for determination of injury set out in Annexure-II of the Anti-Dumping Rules lay down that:

- i. A determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.
- ii. While examination the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of Rule 19 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

F. CUMULATIVE ASSESSMENT OF INJURY:

- 19.(a) Annexure II (iii) under Rule 11 supra further provides that "in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti Dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual country is less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and cumulative assessment of the imports is appropriate in light of

the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles”

- (b) The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the limit prescribed above. Cumulative assessment of the effect of the imports from UAE and China P.R. is appropriate since the export prices from these countries were directly competing with the prices offered by the Domestic Industry in the Indian market and displacing domestic producers here
20. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra.”

21. **VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY:**

- (i) It has been mentioned by M/s RAK Ceramics and some importers that there is no injury to Domestic Industry. Some excerpts from the Director's Report of M/s HRJ where an increase in demand by ***% for the next few years has been indicated has been cited. It is submitted that the mention made in Director's Report is generally indicative of the entire tile industry.
- (ii) It has been stated that M/s SLP's plant came in operation in November, 2000 and has been used for four months during the year. M/s SPL Vitrified Tiles plant actually commenced commercial production in March, 2000 and not in November, 2000.
- (iii) As regards injury, Designated Authority is bound to look into the factors relating only to product under consideration and not company as a whole. It has been submitted by the importers/exporters that the killer earthquake in Gujarat in January, 2001 has affected the production of M/s SPL. It is submitted that the plant of M/s SPL is located in Haryana.
- (iv) Extensive arguments have been made that the injury analysis ought to have been made on model to model or grade to grade basis. While making this contention, the opposing parties have completely lost sight of Para 6 of Annexure II of Anti Dumping Rules. The same is reproduced below for ready reference.

“(vi) The effect of the dumped imports shall be assessed in relation to the domestic production of the like article when available data permit the separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits. If such separate

identification of that production is not possible, the effects of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which the necessary information can be provided."

- (v) This particular provision has been added precisely due to the reason that model to model or grade to grade is inconceivable as separate identification of the production of the Domestic Industry on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits is not feasible. In fact, this provision gives enough powers to the Designated Authority to take a larger range of products than the product under consideration under certain circumstances. Therefore, there is no basis to claim that the injury analysis ought to be done for a subset of the product under consideration.
- vi) It has been mentioned that the Domestic Industry has made goods profits and therefore their claim of injury is not justified. In this regard, it is submitted that the injury analysis is required to be done only for the product under consideration and not for company as a whole. CEGAT Case Law no.2000(117) ELT-625 (CEGAT), Automotive Tyre Manufacturers Association Vs. Designated Authority is relevant in this regard.
- (vii) The importers from the subject countries account for more than 70% of the total imports and that the imports have been able to capture 3.66% of the total demand in a short period of nine months which is very significant. The market share of the Domestic Industry could have been higher by better capacity utilisation but for the dumped imports resulting in depressed demand for the domestic producers.
- (viii) One of the importers has argued that examination of price undercutting is not proper and that the Domestic Industry has charged 2.34 times of the landed value of imports and that it has caused injury to them. It has been argued that price undercutting is to be done at the distributors stage as there is a vast difference between the landed value and that the price to the ultimate consumers. Further it has also been mentioned that retail price should be considered for determining the price undercutting. It has been mentioned that NITCO tiles has been selling the products in India at a significant margin compared to landed value of such products. This difference is adequate to conclude that the NITCO tiles has more than sufficient margin available to them because of the dumped prices. They import the product and are therefore in a position to depress the price in domestic industry at their will. This is in stark comparison with the submissions of NITCO Tiles Ltd. and RAK Ceramics that even though the price of the dumped imports is very low, the domestic resale price of the same is very high. The Domestic Industry has submitted the actual data

pertaining to the product under consideration with regard to the issue of price undercutting and price underselling, which has been the basis of the preliminary findings by the Authority.

- (ix) It was also argued by the Counsel for Kajaria Ceramics that the competition has been from the small scale sector and that dumping would not have caused injury to the Domestic Industry. The argument of importer is misleading as SSI sector does not manufacture Vitrified Tiles at all.

22. VIEWS OF BUILDER ASSOCIATION OF INDIA:

- (i) The prices of different grades and types of Vitrified Tiles vary quite substantially not only internationally but also in local market and therefore a common benchmark reference price cannot be set. Before doing any analysis of dumping injury and causal link, identification of different varieties/types of Vitrified Tiles both manufactured within and imported into the country should be done.
- (ii) Domestic producers have themselves admitted that their sales volumes as well as realisations have gone up and therefore they cannot claim injury on account of imports.

23. VIEWS OF M/S TRISHLA DISTRIBUTORS:

- (i) The production of different grades depends upon the efficiency of a producer and that they are not produced separately. Higher the production of premium quality tiles, higher is the sales realisations. The gradation of tiles is done well before packing. The petitioners have not disclosed the production of their different types and whether they can produce as per international standards. The injury to the petitioners companies is due to their inability to produce higher quality product and as such it is important to note that expenditure incurred remains the same irrespective of grade/quality.
- (ii) Size, colour, grade and designs of tiles affect costs and price. The production of tiles also results in wastage because of breakage. The wastage levels of Indian producers is very very high. The consumers cannot be penalised for this inefficiency of the Indian producers.
- (iii) The injury to the petitioners could be on account of having high work in progress or the inventories. The project report of the petitioner should be called for and the standards taken in project report for type-wise production should be considered.
- (iv) The petitioners companies are multi-product companies producing different types of tiles and that they have sharing facilities. It is possible

that costs incurred on other types of tiles have been allocated to Vitrified Tiles with regard to items like overheads and utilities.

- (v) The petitioners companies were crying about losses in Ceramic Tiles. They are now crying about losses in Vitrified Tiles but these companies have been showing good profits and all along and there is no change in the profitability of the ceramic industry. Therefore we wonder where from the industry makes profits.
- (v) The product is a consumer product and has soled primarily at retail level. The price at which the material is imported and is finally resold to the consumers is vastly different. After importation a number of expenses are incurred by the importers. There would be no price undercutting at the ultimate retail level.
- (vi) The imports of Vitrified tiles was permitted without restriction only from 1.4.2000 and that the period of investigation also starts from 1.4.2000. It is not the case of sudden increase of imports and therefore the question of comparing the imports with the previous period when no imports were permitted is not possible.
- (vii) The Domestic Industry has mentioned that the demand has gone up and therefore the production capacity has also increased. In absence of any details regarding increase in imports in absolute terms or relative terms, question of levy of anti dumping duty is not proper.
- (viii) The Domestic Industry has failed to provide any concrete evidence to show that they have suffered injury because of imports. The margin of profit is only one of the factors and itself is not sufficient to conclude the injury.
- (ix) Before injury is examined, the issues pertaining to inefficiency, fair return, sales and profits have to be considered.
- (x) The Domestic Industry manufacture both premium and second grade tiles and there is appreciable price difference and therefore the data submitted by the Domestic Industry relating to market realisation by them is fundamentally wrong and flawed.
- (xi) The Designated Authority may also see that prior to imports and after imports, the price realisation of the Domestic Industry has remained same. The prices of GF 109 and GF 200 indicate the same.

- (xii) The MRP price of Domestic Industry cannot be compared with landed cost of imports. Suitable adjustments have to be given before any attempt is made to determine the extent of injury.

24. **VIEWS OF M/S KENT CERAMIC TILES COMPANY PVT. LTD. & M/S KAJARIA CERAMICS:**

- (i) On the issue of price under-selling, the Authority must disclose the ingredients and elements of Non-Injurious Price to the interested parties. Also as per the Panel Report in EU-Argentina Ceramic Tiles case, the onus is on Designated Authority to distinctly examine each of the 15 indications for injury as per Annexure II to the Rules. The Director's Report of M/s HRJ also shows that competition is expected from imports and also from small scale sectors. Therefore the petitioners are subjected to a competition from sources other than imports as well.
- (ii) Domestic manufacturers control 96.34% of the market and the impact of different products made by the domestic manufacturers is far more significant than the impact of imports.
- (iii) The Authority has not considered factors other than dumping which would have caused injury to the Domestic Industry. The product is of mass usage in almost all households, commercial establishments, government offices, hospitals, colleges, etc. and that 400 submissions have been filed which are representing the user interests. Designated Authority should follow some yardstick of a consideration of the interest of domestic users.

25. **VIEWS OF M/S NITCO TILES :**

- (i) The objective assessment of injury under Annexure II requires examination of volume of dumped imports, effect of dumped imports and the consequent impact of these imports on domestic producers. It also requires evaluation of 15 parameters spelt out in para (iv) of Annexure II. The Authority has evaluated only 6 out of the 15 indicators. As per Article 3.4 of the Anti Dumping Agreement and the case of Bed Linen from India, Panel on Mexico-HFCS all 15 parameters need to be evaluated. Therefore examination of material injury to Domestic Industry is not objective.
- (ii) The price undercutting and underselling are not the injury parameters listed in Para (iv) of Annexure II.
- (iii) It is factually incorrect that the Domestic Industry has lost market share due to imports from subject countries. The Authority appears to have held a view that the Domestic Industry has lost market share to an extent of 3.66%.

- (iv) Imports of Vitrified Tiles was restricted till 1999-2000. Imports to an extent of of 3.66% market demand cannot be treated as significant for the material injury to Domestic Industry. Actually the petitioners company market share has increased from 51% to 65.8% in the period of investigation. The total demand increased by 37.5% in 2000-2001 over 1999-2000 and the sales of the Petitioners Company increased by 76.1%. The profitability/ ROI analysis in the preliminary findings had not been attempted to analyze as to how the profitability has changed after 1999-2000 to period of investigation especially when M/s SPL has also come into the market.
- (v) The analysis that the landed values of imported products from China and UAE are substantially lower than the average selling price of injurious products and there is price undercutting, actually hides more than it reveals. The fact that the Domestic Industry has charged 2.34 times of the landed value of the imports shows that the landed value of imports has not caused any effect on the domestic pricing. The point at which the price undercutting is to be evaluated is not the landed value vis-à-vis the average selling price but the price at which the imported goods are resold to the distributors vis-à-vis the average selling price of the indigenous industry.
- (vi) The resale prices of M/s NITCO after importing from China is significantly higher than the landed value.
- (vii) As per the calculations on the basis of the index figures, the price undercutting analysis shows that the Domestic Industry has actually been able to realise price higher than its NIP which implies a total absence of material injury.
- (viii) As per the project report filed by M/s HRJ, the realisation has gone up in POI thereby implying no price depression and price suppression.
- (ix) The standard of causal link analysis which has to be established by concluding that dumped imports must be a pre-dominant cause of injury has not been demonstrated.
- (x) The Authority has not considered the factors other than dumping accordance with Para (v) of Annexure II. The fact of existence of M/s SPL in POI and effect of supply demand and price in the Domestic Industry has not been evaluated.
- (xi) The CIF prices from other countries are also lower than the NIP of USD 13.62 per sq. metre which also needs to be evaluated and the effect of imports from other sources should also be evaluated.

- (xii) The Domestic Industry for the product Marbonite has four grades and the price difference between premium grade and other grades is quite significant. The investigation has been completely skewed because the comparison and price undercutting and under selling have been based on one selling price of the Domestic Industry and one NIP
- (xiii) The injury to the Domestic Industry is self-inflicted because of the inefficiencies and Authority may call for and examine for the last three years the ratio of production of premium and other qualities in order to evaluate whether the alleged injury is self-inflicted.
- (xiv) From the submissions on material injury and causal link in Para 12 to Para 17, it is seen that none of the submissions deals with the specific points raised by us in regard to the absence of material injury and causal link. The submissions contain paras which are very general and do not address the specific issues raised by us during the public hearing.

26. **VIEWS OF M/S RAK CERAMICS, UAE:**

- (i) The injury determination lacks objectivity which is necessary as per Annexure II of the Anti Dumping Rules. It is seen from the examination of Designated Authority that there is no price depression in the prices. In fact the prices have increased. There is non-fulfillment of obligation to provide evidence on model to model basis and also that the causal link is not established. The sales volume and sales value have increased over the two years for the Domestic Industry. The market share in terms of quantity has increased significantly for the Domestic Industry and the cash flow and employment has significantly increased. There is a position of strong profitability by the Domestic Industry which is evidence from the case of Murudeshwar Ceramics Ltd. There is no reason that bigger players like HR Johnson and SPL could suffer any losses. Hence, the causal link is not established between the alleged dumped imports and alleged injury.
- (ii) RAK products are selling at higher prices than those of the comparable product of the Domestic Industry, which is evident from the analysis done and provided by RAK.
- (iii) The competition triggers at the level of resale and the resale price in a consumer product which may have positive or negative impact on the domestic prices. Conceptually and principally the resale price is equivalent to the landed value which is to be used for the purpose of determining price undercutting and underselling margins. The Authority should also examine other known factors which could have had impact on the Domestic Industry viz imports from other countries, increase in the

costs and other costs including production, inefficiencies and breakages etc.

27. **VIEWS OF AL-KHALEEF CERAMICS, UAE:**

- (i) The preliminary findings have failed to consider the various submissions made by the interested parties particularly the importers. The Authority in Para 19 of the preliminary findings has relied upon a non-injurious selling price by considering the optimum cost of production but the factors of optimum cost and capacity utilisation are not explained in any manner in the preliminary findings.
- (ii) The Authority has held in the findings that there is increased sales volume and value and has also held that the prices have been suppressed due to imports from China and UAE. The unit price realisation has also gone up as indicated in preliminary findings but at the same time it states that there is suppression of prices. This is inconsistent and contradictory.
- (iii) As regards injury, there are clear discrepancies viz. increase in unit price realisation needs to be examined in the context of return on investment by the Domestic Industry. The sales volume of Domestic Industry have gone up and on the issue of profitability, the Authority has proceeded on the basis of that the Domestic Industry as a whole has negative returns. In a situation where the Domestic Industry is selling above the non-injurious price, i.e. USD 13.62 per square mt., there is no question of injury and causal link.
- (iv) The issue of causal link is to be examined in terms of Para 5 of Annexure II of the Rules which are reflective of article 3.5 of the WTO Agreement. Such analysis has not been done in the present case.

28. **EXAMINATION BY AUTHORITY:**

- (a) The Authority notes the submissions made by various interested parties regarding evaluating injury as per Annexure 3.4 and evaluating 15 parameters of injury as also held in various Panel judgements of WTO. The Authority also notes that various interested parties have indicated that while Article 2.4 pertains to evaluation of the dumping margin ipso facto, it also implies that the price undercutting and underselling should also be calculated after appropriate categorisation of product under consideration. It has also been argued that one of the producers M/s Murudeshar Ceramics Ltd. is making huge profits and that there is no reason why the two other domestic producers should not be making profits. Various excerpts from the Annual Reports have been cited indicating that the ceramic industry is in profits and that there is no

injury caused to the domestic producers. The Authority also notes that the submissions have been made regarding the opening up of the imports of vitrified tiles from 1.4.2000 onwards indicating that there is no history before to make any comparison regarding increase in imports and therefore injury to the Domestic Industry on account of imports.

- (b) As regards the inefficiencies in the production system of the Domestic Industry are concerned, the Authority has considered the methodology of normating the cost of production by benchmarking best utilisation practice of capacity, raw materials and utilities for evaluating the Non-Injurious Price(NIP) for the Domestic Industry.
- (c) The Authority also notes that the submissions have been made regarding evaluating other factors like imports from other countries, inefficiencies in the production system and low market share in demand of the imported tiles to be considered while evaluating the causal link. The Authority has considered these factors as per Article 3.5 of the WTO and Para V of Annexure II of Anti Dumping Rules.
- (d) Analysis of injury to the domestic industry has been done on the basis of the information available on record and the verification done by the officials of the Directorate General of Anti-dumping & Allied Duties. The following parameters have been analyzed for the purpose of assessment of injury to the domestic industry:
- (i) **SALES VOLUME:**

The domestic industry has claimed that the vitrified tiles industry is not very old in India. It was precisely when the industry was hoping to come out of the red in the last financial year, dumping from the subject countries resulted in increase in losses despite some improvement in sales volume over the last two years. The Authority notes that while there is an increase in the sales volume over the last two years, this increase is primarily on account of the additional capacities that had been created during this period.

- (ii) **MARKET SHARE OF THE IMPORTS FROM CHINA AND UAE:**

An examination of the import data for the subject goods would indicate that the imports (as a percent of the total imports) from the subject countries namely, China and UAE have gone up

from NIL in the years 1998-1999 and 1999-2000 to about 71% during the period of investigation.

Year	Imports from subject countries (Sq mtrs.)	Total Imports (Sq mtrs.)	% share
1998-99	0.00	121.00	0.00%
1999-2000	0.00	8.22	0.00%
April 2000-March 2001	119570.00	169246.70	70.65%

The Authority being aware that the imports of the subject goods were restricted in the years 1998-1999 and 1999-2000, decided to carry out an *inter se* trend analysis within the period of investigation. An examination of the import figures indicates that the imports from the subject countries have risen drastically in the second half of the period of investigation as compared to the first half. Of the total imports from the subject countries made during 2000-2001 i.e., the period of investigation, only 6.42% came during the first half while 93.58% was imported in the second half. Thus, it is clear that the imports from the subject countries show an alarmingly increasing trend within the period of investigation. There is an increase of over fifteen times in imports in the second half as compared to the first half of the period of investigation. The Authority notes that the total imports also show a similar trend over during the very first year of opening up of imports but the change is not as drastic and marked as in the case of the subject countries. The rate of growth of imports within the period of investigation is a sufficient indicator of injury to the domestic industry. This fact has also to be viewed in the context of the abnormally low prices from the subject countries.

(iii) **MARKET SHARE OF IMPORTS FROM SUBJECT COUNTRIES (% OF TOTAL DEMAND):**

The Authority has assessed the total demand in the country by adding the total imports to the sales of the entire domestic industry including the petitioners as well as other producers of the product under consideration. The Authority notes that the imports from the subject countries could acquire a market share of 3.66% of the total demand in a very short period of one year. Considering that vitrified tiles are in the nature of consumer goods, a market share of 3.66% clearly constitutes a significant proportion. If only the second half of the period of investigation is considered, the market share of dumped imports is much higher. Moreover the share of imports from the subject

countries could be much more as the current estimates are only from select ports. Further, it is important to note that the imports from the subject countries account for more than 70% of the total imports whereas the WTO Agreement as well as the Indian law considers any import above 3% as significant.

Year	Imports from subject countries (Sq mtrs)	Total Demand (Sq mtrs.)	% share
1998-1999	0.00	1884870	0.00%
1999-2000	0.00	2372081	0.00%
April 2000-Mar 2001	119570	3262558	3.66%

(iv) **PRODUCTION, OUTPUT & LOWER CAPACITY UTILIZATION**

It has been stated by the domestic industry that the demand for the subject goods has grown in the country at a healthy rate and that its use over the conventional floor and wall coverings is steadily catching up. It has further been claimed that despite the existence of a growing market, their losses have gone up due to indiscriminate dumping by the subject countries. The Authority observes that the capacity utilization by the domestic industry in terms of square meters has gone up over the years. The domestic industry has argued that the capacity utilization as a factor of injury can not be of much significance in a product like vitrified tiles as the same would vary significantly depending upon the product mix of the tiles of different sizes being produced during a particular period. Thus, capacity utilization is not being considered as a valid indicator of the health of the industry for a product like tiles where the installed capacity is also a variable depending upon various factors.

(v) **SELLING PRICE / PROFITABILITY**

The domestic industry has stated that they have made substantial investments and was trying to establish itself in the last two to three years. It has further been argued that the incidence of dumping to such a large extent has inflicted considerable injury to the domestic industry and their losses have increased at a time when the domestic industry was hoping to get out of the loss making situation. The Authority notes that the domestic industry as a whole had negative returns on their investments.

(vi) PRICE UNDERCUTTING

It has been claimed by domestic industry that dumping by China and UAE has had a significant impact on the net sales realization by the domestic industry for the subject goods. The Authority notes that to hold on to its market share, the petitioners had to compete with low priced and dumped imports of subject goods from China & UAE. The landed value of the dumped imports also indicates that there is serious price undercutting taking place to the extent of over ****% in case of China and over ****% in case of imports from UAE.

It has been argued by one of the importers that the examination of price undercutting is not proper. It has been stated that the fact that the domestic industry has charged 2.34 times the landed value of imports shows that the landed value of imports had not caused any effect on the indigenous pricing. It is further claimed that there is no price undercutting as importers / distributors are selling the goods in India in retail at much higher prices and that the retail price should be considered for determining the extent of price undercutting. In this connection, it should be noted that the argument of the importer that the comparison for the purpose of price undercutting should be the distributor level has no support of law or logic. Price undercutting is to be seen in the context of the landed value of the imports and not the price at which the goods are sold to the end-users. The Authority nevertheless has made the comparisons of the landed values with the ex-factory prices of the domestic industry as per the consistent practice followed by the Designated Authority.

(vii) PRICE UNDERSELLING

The Authority has also examined the claim of the domestic industry that the domestic industry is suffering on account of losses or abnormally low return on their investments due to price underselling resorted to by the exporters from subject countries. The Authority has worked out the Non-Injurious Price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of price underselling causing injury to the domestic industry. Examination of the available evidence also shows that the domestic industry as a whole has suffered losses on its sales of vitrified tiles.

(viii) EVIDENCE OF LOST CONTRACTS

The complainant domestic industry tried its best to hold on to the customers and expand its market. Yet the fact that 119570 sq. mtrs of dumped imports arrived into India during POI is adequate evidence that it lost potential customers.

(ix) EMPLOYMENT & WAGES

The manpower strength has increased from 537 in 1999-2000 to 606 during the period of investigation. But this increase has to be seen in the context of the additional capacities that had been created during this period. There was no impact on wages as it is not feasible under the existing situation to vary the wages in line with the financial performance of the company.

(x) INVENTORIES

Analysis of the stocks show that there is an increase in stocks to the extent of about 14% at the end of the year 2000-2001 as compared to the previous year.

(xi) PRODUCTIVITY & GROWTH:

The demand for the subject goods is showing a healthy growth and decline in demand is not a factor of injury to the domestic industry. However, the petitioners have lost market share. It may be noted that imports from subject countries in a relatively short period time have been able to capture as high as 3.66% of the total demand. There is no direct impact shown by the domestic industry on labour productivity but the productivity of capital is under pressure as is revealed from the losses incurred by the domestic industry.

(xii) RETURN ON INVESTMENT (CAPITAL EMPLOYED)

Due to severe underselling by the subject countries, the petitioner companies were operating at a loss. Thus the Return on Investments were negative.

(xiii) CASH FLOWS & ABILITY TO RAISE CAPITAL OR INVESTMENTS

All the petitioner companies are multi-product companies and it would not be feasible to judge the ability to raise capital as it is a company specific function and not related to the performance of

any particular product.. The cash flows on account of vitrified tiles business is obviously under pressure as there are direct losses in this business. The domestic industry has also claimed that with the present state of financial losses, it would not be feasible for them to make any further investments in this business.

29. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. For the examination of the impact on the domestic industry in India, the Authority considered such further indices having a bearing on the state of industry as production, sales, stock, profitability, net sales realisation etc. On examination of the evidence, it has been found there has been a sharp price undercutting. Domestic Industry is prevented from utilising its present capacity and capacity utilisation is very low. However, the most significant parameter evidencing injury is the price undercutting as per the evidence available with the Authority. The rate of increase of imports within the period of investigation especially the corresponding fall in the sales realization of the domestic industry are the parameters clearly showing the injury being suffered by the domestic industry. On the basis of the evidence available before the Authority, it is determined that the domestic industry has suffered injury.

G. **CAUSAL LINK:**

30. In determining whether injury (material/threat/material retardation) to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts: -
- (i) Imports of subject goods from UAE and China PR at dumped prices forced the domestic industry to reduce its selling prices to un-remunerative level, which has resulted in a situation of price undercutting in the Indian market.
 - (ii) The imports from China PR and UAE suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India.
31. The Authority, therefore, notes from the above that the imports from the subject countries have been at a price below the selling price of the domestic industry. Further the imports into India have been at a price lower than the non-injurious price for the Domestic Industry. As a

consequence thereof the Domestic Industry is suffering financial losses. The petitioner was also prevented from attaining a reasonable level of capacity utilisation. These parameters collectively and cumulatively indicate that the petitioner has suffered material injury due to the dumped imports.

H. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST:

32. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.
33. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.
34. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from China PR and UAE in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

I. CONCLUSIONS:

35. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:
 - (i) Vitrified/ Porcelain Tiles have been exported to India from UAE and China PR below its normal value resulting in dumping;
 - (ii) The Indian industry has suffered material injury;
 - (iii) The injury has been caused cumulatively by the imports from the subject countries
36. The Authority considers it necessary to impose anti dumping duty on all imports of Vitrified/ Porcelain Tiles from subject countries in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority recommends the amount of anti dumping duty equal to the

margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is compared with the weighted average non-injurious price of the Petitioner Companies determined for the period of investigation.

Accordingly, the Authority recommends that definitive anti dumping duties as set out below be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of subject goods i.e., Vitrified/ Porcelain Tiles, as described in para 6 above and falling under Chapter 69 of the Customs Tariff, originating in or exported from subject countries. The anti dumping duty shall be equal to the amount mentioned in column 3 on all exporters/manufacturers from the countries named in column 2 of the table below:-

Sl.No (1)	Countries/exporters (2)	Amount of Duty US \$/Sq. metre (3)
1.	<u>China P.R.</u> All exporters/producers	8.28
2.	<u>UAE</u> 1. M/s RAK Ceramics 2. All other exporters/producers	0.74 5.54

37. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
38. Subject to the above, the Authority confirms the Preliminary Findings dated 3rd December, 2001
39. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority